सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

वर्ष–01 अंक–58 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, गुरुवार 18 मार्च 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए,

सु-विचार
दिशा दिखाने वाला सही मिल जाए
तो दीपक का प्रकाश भी सूर्य का काम करता है...!!
अज्ञात...

UNITED STUDIES
MBBS CONSULTANTS
MBBS ADMISSIONS (INDIA & ABROAD)
99933-26455 / 97553-66243
235, 236, 2nd Floor, Ghasidas Plaza, Aamapara, GE Road, Raipur, CG 492001

खेला फिर शुरु! ममता का मेगा दांव—75 विधायकों की छुट्टी

विशेष संवाददाता संदीप सिंह / कोलकाता

पश्चिम बंगाल की राजनीति में चुनावी बिगुल पूरी ताकत से बज चुका है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तृणमूल कांग्रेस (TMC) के 291 उम्मीदवारों की सूची जारी कर सियासी पारा चढ़ा दिया है, जबकि 3 सीटें सहयोगी भारतीय गोरखा प्रजातांत्रिक मोर्चा के लिए छोड़ी गई हैं। यह सिर्फ उम्मीदवारों की सूची नहीं, बल्कि चुनावी रणनीति का खुला ऐलान है, जिसमें ममता बनर्जी ने एक साथ कई बड़े दांव खेल दिए हैं।

टीएमसी ने इस बार बड़ा जोखिम उठाते हुए करीब 74–75 मौजूदा विधायकों के टिकट काट दिए हैं। इसे पार्टी के अंदर एंटी-इंकंबेंसी के खिलाफ बड़ा सर्जिकल कदम माना जा रहा है। साथ ही 15 विधायकों की सीटें बदलकर यह संकेत दिया गया है कि पार्टी इस बार नए चेहरों और नई ऊर्जा के साथ मैदान में उतरना चाहती है। 2021 की सबसे चर्चित सीट नंदीग्राम से इस बार ममता बनर्जी खुद चुनाव नहीं लड़ेंगी। वह भवानीपुर सीट से मैदान में उतरेंगी, जबकि नंदीग्राम से नए उम्मीदवार को मौका दिया गया है। इस फैसले ने सियासी हलकों में नई बहस छेड़ दी है।

टीएमसी की सूची में 52 महिला उम्मीदवारों को स्थान दिया गया है, जिससे महिला वोटबैंक को साधने का स्पष्ट प्रयास दिखता है। इसके अलावा 95 उम्मीदवार SC/ST वर्ग से और 47 उम्मीदवार अल्पसंख्यक समुदाय से हैं, जो सामाजिक समीकरणों को संतुलित करने की रणनीति को दर्शाता है। लक्ष्मी भंडार और दुआरे सरकार जैसी योजनाएं इसी रणनीति की आधारशिला मानी जा रही हैं।

दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी भी पूरी आक्रामकता के साथ मैदान में उतर चुकी है। भ्रष्टाचार, भर्ती घोटाला, राशन घोटाला और बेरोजगारी जैसे मुद्दों को लेकर भाजपा लगातार टीएमसी पर हमला बोल रही है। नंदीग्राम से उभरे शुभेंदु अधिकारी इस बार भाजपा के प्रमुख चेहरे के रूप में सामने हैं, जो टीएमसी के गढ़ में सेंध लगाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं।

भवानीपुर से ममता बनर्जी, कोलकाता पोर्ट से फिरहाद हकीम, दमदम उत्तर से चंद्रिमा भट्टाचार्य, कमरहाटी से मदन मित्रा, बेलेघाटा से कुणाल घोष और श्यामपुकुर से डॉ. शशि पांजा मैदान में हैं। इस बार बंगाल की लड़ाई सिर्फ चुनाव नहीं, बल्कि रणनीति की जंग बन चुकी है। एक तरफ ममता बनर्जी का महिला वोटबैंक, कल्याणकारी योजनाएं और मजबूत संगठन है, तो दूसरी तरफ भाजपा का आक्रामक प्रचार, भ्रष्टाचार के आरोप और सामाजिक ध्रुवीकरण की रणनीति। बंगाल की सियासत अब निर्णायक मोड़ पर है। क्या ममता बनर्जी अपना किला बचा पाएंगी या भाजपा इस बार सत्ता परिवर्तन का इतिहास लिखेगी—यह फैसला अब जनता के हाथ में है।

165 करोड़ के संदिग्ध लेनदेन पर हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

CBI जांच के आदेश, पुलिस व बैंकिंग व्यवस्था पर गंभीर सवाल

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर-भिलाई

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने भिलाई के बहुचर्चित 165 करोड़ रुपये के संदिग्ध वित्तीय लेनदेन मामले में कड़ा रुख अपनाते हुए जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) को सौंपने का ऐतिहासिक आदेश दिया है। मुख्य न्यायाधीश रमेश सिन्हा एवं न्यायाधीश रविन्द्र कुमार अग्रवाल की खंडपीठ ने कहा कि वर्षों से जारी जांच के बावजूद तथ्य स्पष्ट न होना गंभीर चिंता का विषय है और यह मामला संभावित बड़े घोटाले की ओर संकेत करता है।

मामला क्या है

याचिकाकर्ता प्रभुनाथ मिश्रा द्वारा दायर रिट याचिका में आरोप लगाया गया था कि भिलाई निवासी अनिमेष सिंह के बैंक खाते के माध्यम से वर्ष 2016 से 2020 के बीच भारी मात्रा में संदिग्ध लेनदेन हुआ। आयकर विभाग की रिपोर्ट के अनुसार संबंधित खाते में 80 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जमा और लगभग उतनी ही राशि निकाली गई। जांच में यह भी सामने आया कि इस खाते के जरिए 170 से अधिक व्यक्तियों के साथ वित्तीय लेनदेन हुआ। विशेष तथ्य यह है कि खाताधारक अनिमेष सिंह की आय मात्र 12 हजार रुपये प्रतिमाह बताई गई, जो इस विशाल लेनदेन को और अधिक संदिग्ध बनाता है।

जांच में खामियां उजागर

हाईकोर्ट ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि— स्थानीय पुलिस अब तक यह स्पष्ट नहीं कर सकी कि धनराशि का वास्तविक स्रोत और गंतव्य क्या है। सैकड़ों खाताधारकों की पहचान होने के बावजूद उनके विरुद्ध कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई केवल एक आरोपी के विरुद्ध चाजर्शीट प्रस्तुत कर दी गई, जबकि पूरा नेटवर्क जांच के दायरे से बाहर रहा।

वर्षों से लंबित जांच में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई

अदालत ने इसे जांच एजेंसियों की गंभीर विफलता माना। बैंक की भूमिका भी संदेह के घेरे में प्रकरण में यस बैंक की भूमिका पर भी न्यायालय ने सवाल उठाए। आदेश में उल्लेख किया गया कि बैंक ने कई खातों एवं वढक लेनदेन से संबंधित पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं कराई। कुछ महत्वपूर्ण वित्तीय प्रविष्टियों का स्पष्ट विवरण भी प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे संदेह और गहरा हो गया।

कोर्ट की सख्त टिप्पणी

खंडपीठ ने कहा कि इतने बड़े पैमाने पर हुए लेनदेन के बावजूद सच्चाई सामने न आना असामान्य है। न्यायालय ने माना कि इस प्रकार की परिस्थितियां बड़े स्तर पर वित्तीय अनियमितता या संगठित आर्थिक अपराध की ओर संकेत करती हैं। ऐसे मामलों में निष्पक्ष एवं स्वतंत्र जांच अत्यंत आवश्यक है।

सीबीआई को सौंपी गई जांच

हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि— CBI इस मामले में विधि अनुसार नई प्राथमिकी दर्ज कर जांच प्रारंभ करे। दुर्ग पुलिस तत्काल समस्त केस डायरी एवं दस्तावेज उइकको सौंपे गए। जांच की प्रगति रिपोर्ट अगली सुनवाई में न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की जाए

लंबा चला विवाद, अब नई दिशा : वर्ष 2020 में दर्ज एफआईआर से शुरू हुआ यह मामला विभिन्न स्तरों पर जांच के बावजूद स्पष्ट निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सका। आयकर विभाग, पुलिस और अन्य एजेंसियों की कार्यवाही के बाद भी लेनदेन की पूरी कड़ी उजागर नहीं हो पाई।

अगली सुनवाई : मामले की अगली सुनवाई 7 अप्रैल 2026 को निर्धारित की गई है, जिसमें CBI द्वारा की गई प्रारंभिक कार्रवाई की जानकारी प्रस्तुत की जाएगी। हाईकोर्ट के इस आदेश से स्पष्ट है कि मामला साधारण धोखाधड़ी से कहीं अधिक गंभीर है। अब जांच उइक के हाथों में जाने के बाद यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस बहुस्तरीय वित्तीय लेनदेन के पीछे वास्तविक नेटवर्क और जिम्मेदार व्यक्तियों का खुलासा कब और किस हद तक हो पाता है।

अब सीबीआई करेगी जांच

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने आर्थिक अनियमितता के मामले में सख्त रुख अपनाते हुए जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो को सौंपने के निर्देश दिए हैं। याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता बी पी सिंह ने बताया कि कोर्ट ने माना है कि पुलिस अब तक धन के स्रोत और खर्च स्पष्ट नहीं कर पाई है और कई खाताधारकों की पहचान के बावजूद कार्रवाई नहीं हुई। यस बैंक की भूमिका भी संदिग्ध बताई गई है। अगली सुनवाई 7 अप्रैल 2026 को होगी, जिसमें अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट पेश करेगी।

नववर्ष, नव ऊर्जा और नव संकल्प का संदेश मुख्यमंत्री साय ने दी नवरात्रि की बधाई

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रदेशवासियों को चैत्र नवरात्रि, हिंदू नववर्ष (नव संवत्सर) एवं गुड़ी पड़वा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी है। उन्होंने इस मंगल अवसर पर प्रदेश के प्रत्येक नागरिक के जीवन में सुख, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और शांति की कामना की है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि चैत्र मास के प्रथम दिन से प्रारंभ होने वाला हिंदू नववर्ष नव ऊर्जा, नव संकल्प और नव चेतना का प्रतीक है। इसी पावन अवसर से शक्ति उपासना के महापर्व चैत्र नवरात्रि का भी शुभारंभ होता है, जो श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक आस्था के साथ पूरे देश में मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि गुड़ी पड़वा विशेष रूप से महाराष्ट्र सहित देश के विभिन्न हिस्सों में नववर्ष के स्वागत का उत्सव है, जो आशा, उत्साह और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतीक है। यह पर्व समाज में सकारात्मक ऊर्जा, नव शुरुआत और उत्सवधमिर्ता का संदेश देता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ की समृद्ध देवी परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि मां शीतला, मां दंतेश्वरी, महामाया, बम्लेश्वरी, कंकाली, बिलईमाता और चंद्रहासिनी देवी जैसे विविध स्वरूपों में प्रदेश की आस्था और संस्कृति गहराई से रची-बसी है। यह आध्यात्मिक विरासत प्रदेश की पहचान को सशक्त बनाती है। उन्होंने कहा कि नवरात्रि के इन पावन दिनों में छत्तीसगढ़ की धरती भक्ति, साधना और शक्ति आराधना से आलोकित हो उठती है। देवी उपासना केवल आध्यात्मिक ऊर्जा ही नहीं देती, बल्कि सामाजिक समरसता, सकारात्मक सोच और आंतरिक चेतना का भी संचार करती है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सुशासन सरकार प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए विकास और विश्वास के नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने मां भगवती से प्रार्थना करते हुए कहा कि उनकी कृपा से छत्तीसगढ़ निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहे और प्रदेश के प्रत्येक परिवार में सुख, शांति और समृद्धि का वास बना रहे।

GOSWWAMI
FLEX PRINTING
ADVERTIZER
भिलाई में सबसे सस्ता, सबसे अच्छा
Hoardings • Flex Banner • Vinyl Printing • One Way Vision • Glow Sign Board
93290-13334, 74711-15735
goswamiflex@gmail.com
Address - 3rd Floor Shop No-1, Arora Tower, M.C. Market

टाइगर रिजर्व के अंतिम बचे वन भैंसे छोटू की शुद्धता जांच की मांग

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

वर्षों से उदंती-सीतानदी टाइगर रिजर्व में रखे गए वन भैंसे छोटू को वन विभाग द्वारा उदंती का अंतिम शुद्ध नस्ल का जंगली भैंसा बताया जा रहा है। डिप्टी डायरेक्टर उदंतीझसीतानदी टाइगर रिजर्व से पूछने पर कि किस आधार पर छोटू को शुद्ध नस्ल का जंगली भैंसा बताया जा रहा है, डिप्टी डायरेक्टर ने एक डीएनए रिपोर्ट दी उसमे कहीं नहीं लिखा है कि छोटू शुद्ध नस्ल का जंगली भैंसा है और और न ही डीएनए रिपोर्ट इस दावे की पुष्टि करती है।

वन विभाग जिस डीएनए रिपोर्ट का हवाला देता है, उसका अध्ययन करने पर यह सामने आता है कि उस रिपोर्ट में केवल उदंती क्षेत्र के जंगली भैंसों के आनुवंशिक आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। रिपोर्ट में कहीं भी किसी एक भैंसे को शुद्ध नस्ल घोषित नहीं किया गया है। रिपोर्ट मुख्यतः भैंसों के बीच आनुवंशिक विविधता (genetic variation) और समानता/असमानता को दर्शाती है, न कि किसी एक भैंसे की शुद्धता (purity) का प्रमाण प्रस्तुत करती है। ऐसे में छोटू वन भैंसे को अंतिम शुद्ध नस्ल का जंगली भैंसा बताना वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित निष्कर्ष नहीं माना जा सकता। छोटू को वास्तव में शुद्ध नस्ल का जंगली भैंसा बताया जा रहा है, तो इसके लिए स्पष्ट वैज्ञानिक प्रमाण और विशेषज्ञों की अधिकृत व्याख्या सार्वजनिक की जानी चाहिए।

सिंघवी ने वन विभाग पर आरोप लगाया है कि शासन को नागरिकों की आवाज न सुनने की अनुशंशा कर वन विभाग वन्यजीव प्रेमियों की आवाज दबाने का प्रयत्न कर रहा है जो कि स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्पराओं के विरुद्ध है। वन विभाग सूचना का अधिकार के तहत जानकारी देने में अडंगा पैदा कर रहा है ता कि वन्यजीव प्रेमी विभाग की गलतियों पर आवाज नहीं उठा सके।

छोटू की उम्र दस्तावेजों में अभी भी 21 वर्ष दर्ज की जा रही है ताकि यह बताया जा सके कि वह प्रजनन योग्य है। दिसम्बर 2025 मे हुई बैठक के मिनिट्स मे उसे 21 वर्ष का बताया गया है। जबकि 2023 मे सूचना का अधिकार के तहत दिए गए दस्तावेजों मे भी उसे 21 वर्ष का बताया गया था। इस प्रकार अबवह 24 वर्ष का हो गया है। वन भैंसों की जंगल मे उम्र अधिकतम 18–20 पहुँच पाती है, कैद में जंगली भैंसे सामान्यतः 20–26 वर्ष तक जीवित रहते हैं। छोटू को भी बाड़े में कैद कर के रखा गया है। छोटू उम्र के अंतिम दौर मे है उसकी उम्र 24 वर्ष से अधिक हो गई है, उम्र बढ़ने के साथ प्रजनन क्षमता काफी कम हो जाती है। शुक्राणुओं (वीर्य) की गुणवत्ता कम हो सकती है। छोटू को उम्र के कारण दिखाई नहीं देता। 2023 की वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की रिपोर्ट में यह उल्लेख मिलता है कि 2023 से कुछ साल पहले छोटू के साथ प्रजनन का प्रयास किया गया था, जो विफल रहा। वन विभाग वर्षों से छोटू पर कई प्रयोग करने का विचार करता रहा है। कभी उसका वीर्य निकाल कर आर्टिफिसल इन्सेमीनैशन करवा कर प्रजनन करवाने का, कभी उसका शुक्राणु संरक्षित करने का। उम्र को देखते हुए अब शुक्राणु संरक्षण का विचार छोड़ दिया गया है। यदि मानव जीवन से तुलना की जाए तो छोटू 75 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति के बराबर माना जा सकता है जिस अवस्था में प्रजनन क्षमता स्वाभाविक रूप से काफी कम हो जाती है। सिघवी ने वन विभाग से सवाल किया है कि उदंती में हाइब्रिड वन भैंसों पर करोड़ों रुपये खर्च किए गए, जंगल सफारी में 2017 से कैद दीप आशा (मुर्रा भैंसा) पर प्रजनन के लिए लगभग 1 करोड़ रुपये और उसके बाड़े पर करीब 2.5 करोड़ रुपये खर्च किए गए, इसके अलावा हर साल का अलग खर्च भी होता है। असम से लाए गए वन भैंसों पर भी करोड़ों रुपये खर्च हुए, फिर भी कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया। ऐसे में विभाग को स्पष्ट करना चाहिए कि क्या राजकीय पशु के नाम पर जनता को गुमराह किया गया?

डीएनए टेस्ट जरुरी नहीं

दर असल वन विभाग बरनावापारा अभयारण्य में रखी गई असम से लाई गई मादाओं में से दो मादा जंगली भैंसों को उदंती-सीतानदी टाइगर रिजर्व लाकर शुद्ध नस्ल का बताए जा रहे छोटू वन भैसे के साथ प्रजनन कराने की तैयारी में है। ऐसे में यह आवश्यक है कि पहले डीएनए रिपोर्ट की वैज्ञानिक स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर ली जाए। अगर अंतिम वैज्ञानिक निष्कर्ष के बिना छोटू के साथ असम की शुद्ध नस्ल की मादा वन भैसों से प्रजनन कराया जाता है और बाद में वैज्ञानिक निष्कर्ष में छोटू शुद्ध नस्ल का नहीं पाया तो इससे उत्पन्न संतानों की आनुवंशिक शुद्धता पर प्रश्न उठेंगे। इसलिए रायपुर निवासी नितिन सिंघवी ने शासन को पत्र लिख कर छोटू के शुद्धता की जाच की मांग थी जिसपर शासन ने प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) को दावों का परीक्षण करने के लिए आदेशित किया है। शासन के पत्र के जवाब में प्रधान मुख्य संरक्षक (वन्यजीव) जो कि डीएनए के विशेष नहीं हैं बिना किसी वैज्ञानिक संस्थान से जांच करवाए, अपर मुख्य सचिव को लिखा कि छोटू शुद्ध नस्ल का है और भविष्य में नितिन सिंघवी के उक्त विषय के सम्बन्ध में संज्ञान न लेने के लिए पत्र लिखा है।

महत्वपूर्ण सूचना! हमारे पाठकों के लिए
सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु का E-Paper भी तैयार है। प्रतिदिन शाम 4:00 बजे पेपर नई दृष्टिबिंदु के गुगल के साइट Nayi Drishtibindu पर अपलोड हो जाता है। सभी पाठकों से आग्रह है कि प्रतिदिन शाम 4:00 बजे साइट पर Nayi Drishti bindu E-Paper सर्च कर ई पेपर देख सकते हैं।

शहर के विभिन्न मंदिरों में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का लगता है मेला

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सिविल लाईन कसारीडीह स्थित प्रसिद्ध मां सतरूपा शीतला मंदिर में चैत्र नवरात्रि का पर्व पूरे आस्था व श्रद्धा के साथ मनाया जाएगा। नवरात्र के पहले दिन 19 मार्च को शुभ मुहूर्त पर सुबह 11.36 बजे कलश स्थापना व ज्योत प्रज्जवलित किए जाएंगे। नवरात्रि पर इस वर्ष मंदिर में 1601 की संख्या मे ज्योत प्रज्जवलित किए जाएंगे।

यह मनोकामना ज्योत देश व विदेश के श्रद्धालुओं के नाम प्रज्जवलित होंगे। नवरात्रि पर्व पर सतरुपा शीतला सेवा समिति द्वारा पूरे 9 दिन 19 मार्च से 27 मार्च तक धार्मिक कार्यक्रम के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। मां सतरूपा शीतला और ज्योत के दर्शन के लिए श्रद्धालु बड़ी संख्या में मंदिर में जुटते है। जिसके चलते मंदिर समिति द्वारा सभी व्यवस्थागत तैयारियां जोर शोर से जारी है। उक्ताशय की जानकारी देते हुए सतरुपा शीतला सेवासमिति के अध्यक्ष रोमनाथ साहू ने बताया कि मंदिर में चैत्र नवरात्रि पर्व के पहले दिन 19 मार्च को शुभ मुहुर्त पर सुबह 11.36 बजे कलश स्थापना व ज्योत प्रज्जवलित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि 23 मार्च को पंचमी पर कलश चढ़ावा व माता का श्रृंगार, संध्या 4 बजे बाना परधनी, 26 मार्च को महाअष्टमी पर्व पर संध्या 4 बजे हवन-पूजन, संध्या 6 बजे से कन्या पूजन व कन्याभोज एवं 27 मार्च को महानवमी

पर्व पर संध्या 4 बजे ज्योत जंवारा की भव्य विसर्जन शोभायात्रा निकाली जाएगी। श्री साहू ने बताया कि नवरात्रि पर विभिन्न जस गायन मंडलियों द्वारा प्रतिदिन मंदिर में जस गीतो की प्रस्तुति के माध्यम से माता की आराधना की जाएगी। सतरुपा शीतला सेवासमिति के अध्यक्ष रोमनाथ साहू ने बताया कि मंदिर में मां शीतला सात रुपों में विराजमान है। जिसके करीब एक स्वयंभू जलकुण्ड का पानी कभी सुखता नहीं है। ऐसी मान्यता है कि मंदिर के जलकुण्ड के पानी के सेवन व उपयोग करने से असाध्य रोग दूर होने के साथ-साथ मनोकामना पूर्ण होती है। फलस्वरुप मंदिर में चैत्र व क्वांर नवरात्रि पर मां शीतला के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का मेला लगता है। सतरूपा शीतला सेवा समिति के अध्यक्ष रोमनाथ साहू ने बताया कि पर्व को लेकर मंदिर में विशेष साज सज्जा की गई। विद्युत लाईट एवं तोरण-पताका आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। चैत्र नवरात्रि पर्व की तैयारी में सतरुपा शीतला सेवा समिति के अध्यक्ष रोमनाथ साहू, उपाध्यक्ष शिव सागर सिन्हा, सचिव प्रदीप देशमुख, कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र धर्माकर, संयुक्त सचिव चम्पा साहू, प्रबंध कायर्कारिणी सदस्य तामेश्वर यादव, पुष्पा श्रीवास, सदस्य भीखम साहू, कृष्णा देशमुख, भारतेंदु गौतम, धनेश सिंह राजपूत,राजेन्द्र शर्मा, ईश्वर अग्रवाल, हेमसिंह ठाकुर, राजेन्द्र चंदेल,राजा ठाकुर, नरेश कुटारे, श्रीधर भजने के अलावा अन्य सदस्य जुटे हुए है।

खास खबर

दुर्ग निगम के प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी दुर्गेश गुप्ता हुए निलंबित

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग में कार्यरत प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी दुर्गेश गुप्ता को लापरवाही के आरोप में तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। इस संबंध में निगम आयुक्त द्वारा 17 मार्च 2026 को आदेश जारी किया गया। जारी आदेश के अनुसार, निगम की सामान्य सभा के दौरान वार्ड क्रमांक 57 के पार्षद सरस कुमार निर्मलकर द्वारा शिकायत की गई थी कि उनके वार्ड के सफाई कर्मचारी 9 जनवरी से 15 जनवरी 2026 तक कार्य से अनुपस्थित रहे। इस मामले में प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी से स्पष्टीकरण मांगा गया था।

प्राप्त जवाब में संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिलने तथा कार्यो के समुचित निरीक्षण एवं नियंत्रण में लापरवाही पाए जाने के कारण छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम 1966 के तहत कार्रवाई करते हुए उन्हें निलंबित किया गया है। निलंबन अवधि के दौरान श्री गुप्ता को नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता दिया जाएगा तथा उनका मुख्यालय राजस्व विभाग निर्धारित किया गया है। बिना अनुमति मुख्यालय छोड़ने पर प्रतिबंध रहेगा। निगम प्रशासन की इस कार्रवाई को कार्य में लापरवाही के खिलाफ सख्त संदेश के रूप में देखा जा रहा है।

भसीन परिवार की तीसरी पीढ़ी को संगठन में दायित्व मिलना गौरव का विषय - भोजराज सिन्हा

भिलाई। नेता प्रतिपक्ष नगर पालिक निगम भिलाई भोजराज सिन्हा ने जनसंघ के समर्पित स्वयंसेवक स्व. चुन्नीलाल भसीन एवं स्व. विधारतन भसीन की जनसेवा की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दिव्या, विद्या रतन भसीन एवं चंदर भसीन के भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ प्रदेश कार्यसमिति सदस्य के रूप में मनोनयन पर हर्ष व्यक्त किया है। श्री सिन्हा ने कहा कि 2023 विधानसभा एवं 2024 लोकसभा चुनाव में विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आप सभी का समर्पण, निष्ठा एवं कार्यकर्ताओं के साथ आत्मीय जुड़ाव संगठन के प्रति आपकी मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने इस योग्य निर्णय हेतु प्रदेश नेतृत्व एवं शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी नवनियुक्त सदस्यों को शुभकामनाएं दीं।

मुख्यधारा की ओर लौटता विश्वास : 140 आत्मसमर्पित नक्सलियों ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

रायपुर। छत्तीसगढ़ में शांति, विकास और विश्वास की नई तस्वीर सामने आई है। बीजापुर और कांकेर जिलों से आए 140 आत्मसमर्पित नक्सलियों ने आज विधानसभा परिसर में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुलाकात कर मुख्यधारा में लौटने की खुशी साझा की। मुख्यमंत्री श्री साय ने आत्मसमर्पित नक्सलियों से आत्मसमर्पण से पहले के जीवन और वतर्मान परिस्थितियों के बारे में विस्तार से चर्चा की। संवाद के दौरान नक्सलियों ने बताया कि अब उनका जीवन पूरी तरह बदल चुका है—जहां पहले वे जंगलों में असुरक्षा और भय के बीच जीवन बिताते थे, वहीं अब वे अपने परिवार के साथ सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

उन्होंने बताया कि उनके क्षेत्रों में अब सड़कों, बिजली और अन्य बुनियादी सुविधाओं का तेजी से विस्तार हुआ है, जिससे जीवन आसान हुआ है। कुछ आत्मसमर्पित नक्सलियों ने भावुक होकर कहा कि उन्होंने पहली बार होली जैसे त्योहार को परिवार के साथ मनाया—यह उनके लिए एक नया और सुखद अनुभव रहा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने सभी का मुख्यधारा में स्वागत करते हुए कहा कि यह निर्णय केवल व्यक्तिगत बदलाव नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि संविधान पर विश्वास जताकर सभी ने एक सकारात्मक और प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार आत्मसमर्पित नक्सलियों के पुनर्वास, रोजगार और सामाजिक पुनर्स्थापन के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में नक्सलवाद अब अपने अंतिम चरण में है।

शंकर नाला के गंदे पानी पर लगेगा ब्रेक, उरला में बनेगा 129 कोड़ का मेगा ट्रीटमेंट प्लांट

शवनाथ नदी को प्रदूषण से बचाने निगम की बड़ी पहल

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग द्वारा शहर की जीवनदायिनी शिवनाथ नदी को प्रदूषण से बचाने एक बड़ी पहल की जा रही है। इसके तहत शंकर नाला एवं पुलगांव नाला के गंदे पानी का शुद्धिकरण कर उसे नदी में छोड़े जाने के लिए उरला क्षेत्र में अत्याधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) का निर्माण किया जाएगा। इसी क्रम में आज महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने उरला स्थित प्रस्तावित निर्माण स्थल का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह नगर निगम की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिसका जल्द ही मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा भूमिपूजन किया जाएगा, इसलिए सभी आवश्यक तैयारियां शीघ्र प्रारंभ की जाएं।

निरीक्षण के दौरान महापौर ने जल कार्य विभाग प्रभारी श्रीमती लीना दिनेश देवांगन एवं लोक कर्म विभाग प्रभारी देवनारायण चंद्राकर, पार्षद रेशमा सोनकर,सरस निर्मलकर,भवन अधिकारी प्रकाशचंद थवानी,उपअभियंता मोहित मरकाम के साथ शंकर नाला के अंतिम छोर, उरला अटल आवास के पीछे शिवनाथ नदी और नाला संगम स्थल का जायजा लिया। लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में बनने वाले इस प्रोजेक्ट स्थल पर उन्होंने अधिकारियों को भूमि की सुरक्षा, सीमांकन (मार्किंग) एवं अन्य प्रारंभिक व्यवस्थाएं जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए।

उल्लेखनीय है कि नाला ट्रीटमेंट प्लांट की यह योजना लंबे समय से चर्चा में रही है। नगर निगम प्रशासन द्वारा विभिन्न प्रशासनिक प्रक्रियाओं को पूर्ण करते हुए टेंडर प्रक्रिया में तेजी लाई गई, जिसके बाद राज्य शासन की स्वीकृति मिलने पर चेन्नई की एक कंपनी को लगभग 129 करोड़ रुपए की लागत से कार्य का वर्क ऑर्डर जारी कर दिया गया है। यह दुर्ग शहर के विकास की दिशा में अब तक का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट माना जा रहा है।इस महत्वपूर्ण कार्य का भूमिपूजन मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव एवं शहर विधायक व कैबिनेट मंत्री गजेंद्र यादव सहित सभापति श्याम शर्मा के अलावा अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रस्तावित है।

इसके लिए मुख्यमंत्री कार्यालय को सूचना भेज दी गई है और अब तिथि की प्रतीक्षा की जा रही है। निरीक्षण के दौरान संबंधित विभागों के अधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

नवरात्रि के पावन पर्व पर विधायक रिकेश का बड़ा उपहार : वैशाली नगर में अब मात्र 1 रुपये में होगा मोतियाबिंद का ऑपरेशन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

वैशाली नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक रिकेश सेन ने आज चैत्र नवरात्रि के शुभ अवसर पर क्षेत्र की जनता के लिए एक बड़ी सौगात की घोषणा की है। स्वास्थ्य सेवाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के अपने संकल्प को दोहराते हुए उन्होंने आगामी 15 जून से 'मोतियाबिंद मुक्त वैशाली नगर' अभियान शुरू करने का निर्णय लिया है।

श्री सेन ने कहा कि मेरा लक्ष्य है कि वैशाली नगर का कोई भी बुजुर्ग या जरूरतमंद व्यक्ति धन के अभाव में अंधकार में न जिए। नवरात्रि का यह पर्व शक्ति और सेवा का पर्व है, इसीलिए आज हमने यह संकल्प लिया है कि स्वास्थ्य सुविधाओं को हर घर तक सुलभ बनाएंगे।

मात्र 1 रुपये में ऑपरेशन और वीआईपी सुविधाएं

इस सेवा के तहत वैशाली नगर विधानसभा के जरूरतमंद मरीजों का मोतियाबिंद ऑपरेशन जिले के सवर्सुविधायुक्त एवं निजी अस्पतालों में कराया जाएगा। खास बात यह है कि मरीजों को इस बड़े ऑपरेशन के लिए मात्र 1 रुपये की टोकन राशि देनी होगी। इसके अलावा अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान मरीज के लिए दोनों समय का पौष्टिक नाश्ता और भोजन भी विधायक की ओर से पूरी तरह निःशुल्क रहेगा।

इस योजना का लाभ लेने के लिए इच्छुक नागरिक जीरो रोड, शांति नगर स्थित विधायक कार्यालय में 15 जून से अपना पंजीयन करा सकेंगे। विधायक कार्यालय में इसके लिए विशेष डेस्क स्थापित की जाएगी। विधायक रिकेश सेन ने पूर्व में घोषित अपनी एक और महत्वपूर्ण योजना की तिथि साझा करते हुए बताया कि 2 अप्रैल से वैशाली नगर के निवासियों के लिए मात्र 1 रुपये में पावर वाला चश्मा प्रदान करने की सेवा विधिवत शुरू हो जाएगी।

गौरतलब है कि विधायक कार्यालय शांति नगर वतर्मान में जनसेवा का एक अनूठा मॉडल बन चुका है। यहाँ पहले से ही मात्र 1 रुपये की टोकन दर पर एक्स-रे, सोनोग्राफी और डायलिसिस, हेलमेट बैंक और कंबल बैंक की सुविधा के आलावा ?सामाजिक सरोकार के तहत ब्राइडल मेकअप, मेहंदी और खेल/सांस्कृतिक/सामाजिक आयोजनों के लिए फिल्टर वाटर की व्यवस्था जारी है।

चैत्र नवरात्रि पदयात्रियों की सुरक्षा के लिए कुम्हारी से अंजोरा बाईपास तक कोरिडोर तैयार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

चैत्र नवरात्रि पर्व के दौरान दर्शन हेतु बड़ी संख्या में पदयात्रियों एवं श्रद्धालुओं के आवागमन को दृष्टिगत रखते हुए यातायात पुलिस दुर्ग द्वारा विशेष सुरक्षा व्यवस्था लागू की गई है। कुम्हारी टोल प्लाजा से अंजोरा बाईपास तक पदयात्रियों के लिए पृथक सुरक्षित कोरिडोर निर्धारित किया गया है।

निर्धारित अवधि 19 मार्च से 27 मार्च 2026 तक मार्ग में 04 पेट्रोलिंग वाहन तैनात किए गए हैं, जो 24 घंटे निगरानी रखते हुए पीए सिस्टम के माध्यम से पदयात्रियों को सड़क के बाएं ओर चलने एवं यातायात नियमों का पालन करने हेतु निर्देशित करेंगे। साथ ही मार्ग में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो, इसके लिए निरंतर निगरानी रखी जा रही है।

कुम्हारी टोल प्लाजा, सिरसा गेट चौक, डबरापारा तिराहा, खुर्सीपार तिराहा, पावर हाउस अंडर ब्रिज, मुर्गा

चौक ? सेंट्रल एवेन्यू, सेक्टर-09 चौक, एमडी बंगला तिराहा , ठगड़ा बांध ओवरब्रिज के नीचे, जेल तिराहा, गांधी तिराहा, पटेल चौक, गंजपारा, पुलगांव चौक, शिवनाथ नदी ब्रिज, अंजोरा बाईपास, राजनांदगांव, डोंगरगढ़ है।

उक्त व्यवस्था के सफल संचालन में यातायात पुलिस दुर्ग के अधिकारी एवं कमर्चारीगण द्वारा सतत निगरानी एवं समन्वयात्मक कार्यवाही की जा रही है। पेट्रोलिंग टीमों द्वारा निरंतर क्षेत्र में उपस्थित रहकर यातायात सुचारू बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

यातायात पुलिस दुर्ग समस्त पदयात्रियों एवं वाहन चालकों से अपील करती है कि निर्धारित मार्ग एवं यातायात नियमों का पालन करें। पदयात्री सड़क के बाएं ओर चलें, रिफ्लेक्टिव सामग्री का उपयोग करें एवं सड़क पर विश्राम न करें। वाहन चालक सावधानीपूर्वक वाहन चलाएं, निर्धारित डायवर्सन का पालन करें तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही से बचें।

599 नग गैस सिलेण्डर और 2841 किग्रा एलपीजी जप्त

नई दृष्टिबिंदु / दुग

घरेलू गैस सिलेंडरों की आपूर्ति एवं वितरण को निर्बाध रूप से बनाये रखने के लिए जिले में निरंतर छापेमारी की कार्यवाही की जा रही है। जांच के क्रम में ग्राम पंचायत रसमड़ा के बोरई इंडस्ट्रीयल ग्रोथ सेंटर में स्थित पापुशा गैसेस प्रा.लि. की आकस्मिक जांच जिला खाद्य कार्यालय के अधिकारियों के द्वारा की गई। उक्त सेंटर में कान्फिडेंस पेट्रोलियम इंडिया लिमिटेड के द्वारा 02 विभिन्न ब्रांडों गो गैस एवं गैस प्वाइंट के नाम से गैस सिलेंडरों की सप्लाई डीलर के माध्यम से उपभोक्ताओं को की जाती है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली से भिन्न समानांतर विपणन प्रणाली के रूप में पापुशा गैसेस प्रा.लि. तथा कान्फिडेंस पेट्रोलियम इंडिया लिमिटेड के द्वारा कार्य किया जाना पाया गया।

खाद्य नियंत्रक अनुराग भदौरिया से मिली जानकारी अनुसार फर्म की जांच में कुल 599 गैस सिलेंडर पाये गये। गैस सिलेंडरों में रिफिलिंग के लिए 03 बुलेट भी पाये गये जिसमें 2841 कि.ग्रा. एलपीजी भंडारित होना पाया गया। जांच के समय फर्म में विभिन्न सिलेंडरों में पेंटिंग का काम किया जा रहा था तथा

सिलेंडरों के नेट वेट, टेयर वेट तथा सिलेंडरों की एक्सपायरी डेट अंकित की जा रही थी। मांगे जाने पर उक्त कार्य से संबंधित कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत नही किया गया। फर्म के द्वारा प्रस्तुत स्टाक पंजी तथा भौतिक सत्यापन में अंतर पाया गया। फर्म के मैनेजर द्वारा जानकारी दी गई कि अतुल रबर को डीलर के रूप में उनके द्वारा सप्लाई की जाती है किन्तु उक्त डीलर के वैधता अथवा करार किये जाने आदि के संबंध में कोई भी दस्तावेज नही दिया गया। इस प्रकार उक्त फर्म का समानांतर विपणनकर्ता के रूप में कार्य करना पाया गया किन्तु फर्म के द्वारा इस संबंध में कोई जानकारी नही दी गई और न ही रेटिंग प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया गया।

फर्म के द्वारा कलेक्टर दुर्ग को किसी प्रकार की जानकारी नही दी जा रही है। इस प्रकार पापुशा गैस प्रा.लि. रसमड़ा तथा कान्फिडेंस पेट्रोलियम इंडिया लिमिटेड के द्वारा द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस (प्रदाय और वितरण विनियमन) आदेश 2000 की विभिन्न कंडिकाओं जैसे- एलपीजी के विक्रय का अप्राधिकृत कारोबार करने, द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस उपस्करों के कब्जा, कार्यस्थल पर स्टाक और कीमत को प्रदर्शित नही करने, रजिस्टर का सही लेखा नही रखने, रेटिंग प्रमाण पत्र प्रस्तुत नही करना आदि का उल्लंघन पाये जाने पर 599 नग गैस सिलेंडर तथा 2841 किग्रा एलपीजी जप्त किया गया।

!! न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग !!

-:: ईश्तहार::-

रा.प्र.क. 202603101000121
अ-6 वर्ष 2024-25

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक यमुना ढीमर पति दुर्गेश ढीमर निवासी राजनांदगांव द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 45 स्थित भूमि ख.नं. 6100, 6101 रकबा 0.030,0.060 हे. भूमि आवेदक के पिता के नाम पर दर्ज है भूमिस्वामी की मृत्यु हो जाने से भूमिस्वामी का नाम विलोपित कर उनके विधिक वारीसानों का नाम दर्ज किये जाने के संबंध में आवेदन-पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त संबंध में पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 9.04.2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 17.03.2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार::-

रा०प्र०क० 202603101000075/अ-27/वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक शंकुतला साहू पति किशोर कुमार साहू निवासी - पुरानी बस्ती कुरूद मिलाई द्वारा ग्राम कुरूद प.ह.नं. 46 रा.नि.मं. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि ख.न. 428 रकबा 1.0600 हे. अनावेदक नरेन्द्र कुमार आ. स्व. सुबेलाल के नाम पर दर्ज है। उपर वर्णित भूमि को आवेदिका 1/5 हिस्सा खाता विभाजन किये जाने हेतु आवेदनमय दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 06/04/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 13/03/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार::-

रा०प्र०क० 202603101000074/अ-27/वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक शंकुतला साहू पति किशोर कुमार साहू निवासी - पुरानी बस्ती कुरूद मिलाई द्वारा ग्राम कुरूद प.ह.नं. 46 रा.नि.मं. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमिस्वामी हक की भूमि ख.न. 67/1, 10801/2, 1105/1 रकबा 1.06600 हे. अनावेदक नरेन्द्र कुमार आ. स्व. सुबेलाल के नाम पर दर्ज है। उपर वर्णित भूमि को आवेदिका 1/5 हिस्सा खाता विभाजन किये जाने हेतु आवेदनमय दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 06/04/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 13/03/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

जोक्स

4 बज गए

एक आदमी और उसकी पत्नी में अनबन हो गई और उन्होंने एक दूसरे से बोलना बंद कर दिया।
एक दिन आदमी को सुबह 5 बजे की रेलगाड़ी से कहीं जाना था। इसके लिये 4 बजे जागना जरूरी था,लेकिन वह भी पहले नहीं बोलना चाहता था।
लिहाजा उसने कागज पर नोट लिखा- मुझे 4 बजे जगा देना और पत्नी के सिरहाने रख दिया।
सुबह जब वह उठा तो 9 बज रहे थे। उसकी ट्रेन छूट चुकी थी।
गुस्से से भन्नाया हुआ वह पत्नी पर चिल्लाने ही वाला था कि उसकी नजर।
सिरहाने रखे कागज के टुकड़े पर पड़ी, जिस पर लिखा हुआ था- 4 बज गये, जाग जाइये।

एक्साइड बैटरी

मनोज कार में बैटरी लगवाने गया।
कारीगरः सर एक्साइड की बैटरी लगा दूं?
मनोज (कुछदेर सोचने के बाद): यार कौन बार-बार आएगा, तू ऐसा कर, दोनों ही साइड की लगा दे।

मोबाइल में घुसाना

मेरे जल्दी जगने से घर वालों को कोई खुशी नहीं होती, क्योंकि उनको पता है जल्दी उठकर भी मोबाइल में ही घुसा रहेगा।

मौका

महिलाः डॉक्टर साहब, मेरे पति नींद में बातें करने लगे हैं। क्या करूं?
डॉक्टरः उन्हें दिन में बोलने का मौका दीजिए।

गूगल

लड़कीः सुन जानू, गूगल मेल होता है कि फीमेल।
लड़काः बेबी फीमेल होता है।
लड़कीः क्यों।
लड़काः क्योंकि अपना सेंटेन्स पूरा होने से पहले ही वो उसका सजेशन देना शुरू कर देता है।

गार्डन के पौधों को पानी कब और कैसे दें

पौधों को तेज धूप में पानी की ज्यादा जरूरत होती है। गार्डन में लगे पौधों को उनकी प्रकृति और जरूरत के हिसाब से पानी कब और कैसे देना है आइये इसके बारे में जानें-

- **सही समय :** बसंत और पतझड़ के मौसम में पौधों में पानी सुबह के समय देना चाहिए। गर्मी के दिनों में सूर्यास्त के बाद पानी दें। गर्मी में अगर धूप में उन्हें पानी दिया जाता है तो पानी वाष्पीकृत हो जाता है और पौधे मुरझा जाते हैं।
- **कितना दें पानी :** पौधों में इतना पानी डालें कि वह जड़ों तक पहुंच सके। पौधों में रोज पत्तियों पर पानी के केवल छिड़काव से मिट्टी का ऊपरी सिरा सूखा रहता है और पौधा जड़ के आसपास से ही विकास कर पाता है, इसलिए पौधे को पानी जड़ में देना चाहिए।
- **पानी का रेग्युलेशन :** पौधा अगर बड़ा हो तो एक ही स्थान पर ज्यादा पानी डालें। छोटे और कोमल पौधों को हल्के हाथों से पानी दें। धीरे-धीरे स्प्रे से उनकी मिट्टी डिस्टर्ब नहीं होती और छोटे पौधे अपनी जगह पर खड़े रहते हैं।
- **नमी बनी रहे :** मिट्टी में नमी की मात्रा को बनाये रखने के लिए उसके ऊपरी सिरे पर छोटी टहनियों की सुरक्षा देनी चाहिए। इससे उनकी जड़ों में मौजूद पानी वाष्पीकृत होकर उड़ता नहीं है और पौधों में नमी बनी रहती है।
- **तेज धूप में पानी न दें :** तेज धूप में पौधों को पानी देने से उनकी पत्तियां सड़ जाती है इसलिए पानी सूर्योदय या सूर्यास्त से बाद ही देना चाहिए।
- **स्प्रिंकलर द्वारा सिंचाई :** लंबे पौधों को पानी देने के लिए अगर स्प्रिंकलर का इस्तेमाल किया जाता है तो यह कुछ मीटर की दूरी पर होना चाहिए। इससे पौधों के ऊपर से पानी जाता है और उनकी टहनियों और मिट्टी में नमी बनी रहती है। स्प्रिंकलर द्वारा पौधों को पानी देने से उनमें जमी धूल और मिट्टी धुल जाती है।

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

जागरूकता से ही मिलते हैं अधिकार

आज के बाजारवादी दौर में उपभोक्ता का जागरुक होना बहुत जरूरी है। पूंजीवाद के इस युग में एक उपभोक्ता के नजरिये से आपको हर मोर्चे पर सजग रहना चाहिए। एक उपभोक्ता होने के नाते आपको कई अधिकार दिए गए हैं, जिनके बारे में आपको पता होना जरूरी है। हर साल 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया जाता है। इस दिन उपभोक्ता को जागरुक करने के उद्देश्य से कई तरह के अभियान भी चलाए जाते हैं।

इतिहास : विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाने का विचार राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने दिया था। 15 मार्च 1962 को, राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने अमेरिकी कांग्रेस को ऑफिशियली संबोधित करते हुए उपभोक्ता अधिकारों के मुद्दे को मजबूती से उठाया था। उपभोक्ता अधिकारों की बात करने वाले वे दुनिया के पहले लीडर थे। उपभोक्ता दिवस पहली बार 15 मार्च 1983 को मनाया गया था। तब से हर साल यह दिन मनाया जा रहा है।

उद्देश्यः इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना है। बाजार में होने वाली ग्राहक जमाखोरी, कालाबाजारी, मिलावटी चीजों का वितरण, तय मूल्य से ज्यादा दाम वसूलना, बिना मानक चीजों की बिक्री, ठगी, नाप-तौप में अनियमितता, गारंटी के बाद भी सर्विस नहीं देने के अलावा उपभोक्ताओं के प्रति होने वाले अपराधों को देखते हुए इस दिन जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।

उपभोक्ता को मिलते हैं यह अधिकार : उपभोक्ता को सरकार द्वारा कई तरह अधिकार मिलते हैं। इसमें सबसे पहला अधिकार है सुरक्षा का अधिकार। इसके तहत दुकानदार ग्राहकों को कोई भी ऐसी चीज नहीं बेच सकता है जिसकी गुणवत्ता खराब हो। अगर दुकानदार कोई खराब चीज देता है तो उसे बाद में सामान को बदलना होगा। अगर वह ऐसा करने से मना करता है तो आप इसकी शिकायत दर्ज करवा सकते हैं। सुरक्षा के अधिकार के साथ ही ग्राहकों को सूचना का भी अधिकार मिलता है। आप अपनी सर्विस या चीज की शुद्धता और मूल्य का पता कर सकते हैं। इसके साथ ही ग्राहकों को चुनने का भी अधिकार मिलता है।

ग्राहकों अपनी जरूरत और सहूलियत के अनुसार कोई भी चीज खरीदने की आजादी मिलती है। इसके साथ ही अगर ग्राहक के साथ कंपनी या दुकानदार बेईमानी करता है तो उपभोक्ता कोर्ट में जाकर सुनवाई करवा सकता है, यानी उसे सुनवाई का भी अधिकार मिलता है। इसके साथ ही उपभोक्ता को समस्या के समाधान का भी अधिकार मिलता है। इसके साथ ही ग्राहकों को उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार भी मिलता है। इस अधिकार के तहत सरकार को समय-समय पर ग्राहक जागरूकता अभियान चलाकर उपभोक्ताओं को उनके अधिकार के बारे में अवगत कराना पड़ता है।

विश्व नींद दिवस

8 घंटे की भरपूर नींद का सेहत पर पड़ता है अच्छा असर

हर साल मार्च के तीसरे शुक्रवार (15 मार्च) को विश्व नींद दिवस मनाया जाता है। रात को अच्छी नींद लेने की सलाह देते हैं। नींद हमारे मन, शरीर और आत्मा को फिर से जीवंत करने में मदद करती है और हमें अगले दिन की चुनौतियों और तनावों के लिए तैयार करती है। रात को अच्छी नींद लेने का बहुत महत्व है और यह दिमाग को संतुलित और स्वस्थ बनाए रखने के प्रमुख तरीकों में से एक है।

हमारी दैनिक दिनचर्या में नींद एक प्राकृतिक और आवश्यक भाग है, यह हमको उर्जा प्रदान करती है, जो कि स्वस्थ जीवन जीने के लिए जरूरी है। गहरी व सही मात्रा में ली गई नींद हमारे मन व शरीर को संपूर्ण विश्राम देती है जिससे हम को ताजगी मिलती है और हम ऊर्जावान और प्रसन्न हो जाते हैं।

- गहरी नींद यानि एनथ्री स्टेज की नींद शरीर के लिए बहुत जरूरी है। आम भाषा में कहें तो दिनभर काम करने या दौड़भाग के दौरान शरीर के अंदर जो भी टूट-फूट होती है, सोते समय शरीर में उन मांसपेशियों या कोशिकाओं की मरम्मत होती है।
- 8 घंटे की गहरी नींद के बाद शरीर रोगों से लड़ने के लिए तैयार होता है और इम्यूनिटी मजबूत होती है। इस नींद के बाद जब व्यक्ति उठता है तो एकदम तरोताजा और एनर्जी से भरपूर महसूस करता है।
- दिमाग में दिनभर जो भी बातें या विचार भरे होते हैं, नींद में शरीर और मस्तिष्क के आराम में पहुंचने के बाद ये अधिकांश कचरा खुद से डिलीट हो जाता है और दिमाग शांत हो जाता है।
- पर्याप्त नींद लेने के बाद सोचने-समझने की क्षमता और याददाश्त भी बढ़ती है। मानसिक परेशानियां जैसे स्ट्रेस आदि भी कम होते हैं। कहते हैं कि शरीर का ग्रोथ हार्मोन भी सोने के दौरान ही ज्यादा तीव्र गति से बढ़ता है।
- अच्छी नींद से आपके शारीरिक स्वास्थ्य को फायदा होता है, जैसे कि वजन और ब्लड प्रेशर कंट्रोल होना।
- अच्छी नींद से दिल के रोगों का खतरा कम होता है और आपका हार्ट हेल्दी रहता है।
- ये आपके वजन को कंट्रोल करने में मदद करता है और मोटापे का कम होने की संभावना होती है।

हर किसी को लुभाती है सांस्कृतिक नगरी चेन्नई

बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित चेन्नई अपने अनुपम वैभव के लिए विख्यात है तो यह नगर सभी धर्मावलंबियों का केंद्र-स्थल भी रहा है। पार्थसारथी मंदिर, अगस्त्य मंदिर, सुब्रह्मण्य स्वामी या मुरूगन मंदिर, अष्टलक्ष्मी मंदिर, कोदण्ड रामस्वामी मंदिर, शिव-विष्णु मंदिर, मांगाडु भगवती मंदिर इत्यादि विशेष रूप से उगेखनीय हैं। वैसे 1680 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने सेंट मेरीस के नाम से प्रथम चर्च का निर्माण किया।

सेंट थामस यहां की एक पहाड़ी पर रहे जो सेंट थामस माउंट के नाम से प्रसिद्ध है। 1795 में वालाजा मस्जिद निर्मित हुई तो नगर की सबसे बड़ी मस्जिद सहस्त्र दीप क्षेत्र में स्थित है। मद्रास महानगर में जैन धर्मावलंबियों की संख्या भी कम नहीं है। त्यागराय नगर में निर्मित शांतिनाथ जैन मंदिर धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि स्थापत्य एवं कलात्मक दृष्टि से भी अनुपम बन पड़ा है। पास ही सिखों का गुरुद्वारा है। अन्य महानगरों से भिन्न यहां के निवासी व्यस्त जीवन में से समय निकालकर अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास करते नजर आते हैं। इसकी झलक हमें सूर्योदय के साथ प्रत्येक परिवार के घर व आंगन में कलात्कता का परिचय देने वाली रंगोली, तुलसीकोट की परिक्रमा, स्नान, संध्या वंदन, सूर्य नमस्कार, पूजा-अर्चना में मिलती है। तमिल व्यंजनों में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों ही व्यंजनों का सम्मिलन है। शहर में विभिन्न स्थानों पर अल्पाहार के रूप में पोंगल, दोसा, इडली, वड़ा, आदि मिलते हैं जिसको गर्मा गर्म या ठंडी कॉफी के साथ परोसा जाता है।

दर्शनीय स्थल : जिनमें मद्रास विश्वविद्यालय, चेपॉक महल, मत्स्य पालन केन्द्र, कपिलेश्वर और पार्थसारथी का मंदिर, अजायबघर और चिड़ियाघर आदि प्रमुख हैं। चेन्नई का एक अन्य महत्त्वपूर्ण आकर्षण है सेंट जार्ज फोर्ट। 1640 में फ्रांसिस डे द्वारा बनवाया यह किला ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक केंद्र था। चेन्नई का मरीना बीच पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण है। यह विश्व का दूसरा सबसे लंबा समुद्र तट है। इसके दो सौ से तीन सौ गज चौड़े रेतीले तट पर शाम को इतनी अधिक भीड़ होती है कि लगता है मानो सारा शहर वहीं आ गया है। सारे दिन की थकान को चेन्नई वासी शाम को मरीना बीच की अथाह जल राशि में बहा देना चाहते हों। यहां समुद्र की गहराई और लहरों के तेज प्रवाह के साथ शार्क मछलियां भी हैं। पास ही बने मछलीघर में तरह-तरह की देशी-विदेशी मछलियां देखी जा सकती हैं।

बदल रहा है मौसम, बदलनी होगी अब वार्डरोब

गर्मियों में आपको अपने वार्डरोब में भी बदलाव की जरूरत है। गर्मियों के अनुकूल ड्रेसेज के कलर और फैशन स्ट्रीट में उनके लिए एक्ससिरीज भी देखनी होगीं। आपकी वार्डरोब कैसी हो, आइये जानें। पिछली गर्मियां में आपने जो ड्रेसेज पहनी थीं, उनको एक बार फिर से निकालें और पहनकर देखें। यदि वो आपको फिट आती है और अच्छी कंडीशन में हैं और स्टाइल के अनुकूल हैं तो उन्हें अपनी वार्डरोब में शामिल करें। इसके अनुसार ही अपनी खरीदारी करें और इन्हीं से मैचिंग करती हुई ड्रेसेज खरीदी जा सकती हैं।

- वार्डरोब से अपनी कलरफुल ज्वैलरी जैसे हुप ईयरिंग, ब्रेस्लेट और बैग्स को निकालें जिन्हें आप पिछले गर्मी के सीजन में कैरी करती रही हैं, उन्हें वाइट, न्यूट्रल और पेस्टल के साथ कंबाइन करके पहन सकते हैं।
- गर्मी के इस मौसम में गहरे रंगों के लेदर बैग की बजाय दो टोन के कैनवास या हल्के न्यूट्रल रंगों के बैग्स अगर वार्डरोब में हैं तो उन्हें रखें या नये खरीदें।
- कैपरी का क्रेज इस बार भी बरकरार रहेगा। उसे टैंक या फॉम फिटिंग टी-शर्ट के साथ पहना जा सकता है। शॉर्ट्स ऐसे रंगों के चुने जो ब्राइट और न्यूट्रल हों।
- बोल्ड कलरफुल प्रिंट या सिंगल शेड में घुटनों तक लंबी स्कर्ट को सिंपल टॉप के साथ पहना जा सकता है।
- व्हाइट का जादू कभी कम नहीं होता। गर्मी के मौसम में अपनी वार्डरोब में व्हाइट पेंट्स जरूर होनी चाहिए जिसे कहीं भी पहना जा सकता है। यह कॉटन या स्ट्रेचेबल डेनिम में हों तो कूल लगती हैं। कैजुअल लुक के लिए इसे गहरे रंग की टी-शर्ट के साथ पहन सकते हैं या फॉमर्ल में फ्लोरल ब्लाउज के साथ भी पहना जा सकता है।
- अपने गर्मी के वार्डरोब में सबसे खास और अहम सफेद कॉटन की टी-शर्ट और टैंक टॉप जिसे जींस या कैपरी के साथ पहना जा सकता है। सफेद कुर्ते को पटियाला के साथ या सफेद सलवार कमीज को गर्मी के सीजन में किसी भी अवसर पर कलरफुल दुपट्टे के साथ पहना जा सकता है।
- गर्मी की अपनी पोशाक को और स्टाइलिश लुक देने के लिए सनग्लासेज अपने साथ रखें। स्टाइल के साथ-साथ यह तेज धूप और गर्मी से भी बचाते हैं।
- ओपन और स्टाइलिश शूज को तो बिल्कुल न भूलिए। स्ट्रैपी सैंडिल्स को एलीवेटिड हील्स के साथ पहनें। फ्लिप फ्लोप्स और कैनवास स्नीकर्स को अपने कलेक्शन में जरूर रखें।

कहानी

मित्रता की पहचान

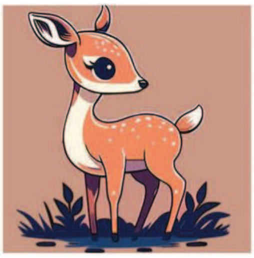

भेड़िया चीख उठा। उसने गुस्से में भरकर साही पर अपना दूसरा पंजा मारा पर साही के उठे हुए कांटे उस पंजे में भी बड़ी जोर से चुभ गए। वह तिलमिला गया। उसी समय बंदर ने एक लकड़ी उठाकर जोर से भेड़िए के सिर पर दे मारी।

मुनमुन हिरण का बच्चा था। वह अपने माता-पिता के साथ जंगल में रहता था। थोड़ा बड़ा होने पर वह अकेला ही जंगल में घूमने लगा।

एक दिन जब मुनमुन घूम घाम कर वापस आया तो उसके पिता ने उससे कहा, बेटा मुनमुन, अब तुम बड़े हो गए हो, अकेले घूम-फिर सकते हो पर बेटा, जंगल में बहुत से खतरे हैं। कई जानवर खतरनाक होते हैं। वे तुम्हें अकेला पाएंगे तो मार डालेंगे। इसीलिए तुम कुछ अच्छे मित्र बना लो, मित्र मुसीबत में मदद करते हैं।

मुनमुन को अपने पिता की सलाह अच्छी लगी। अगले दिन सुबह वह अकेले दोस्तों की तलाश में बाहर निकल गया। वह कुछ दूर ही चला था कि एकाएक उसे सुनाई पड़ा।

मुनमुन भाई, कहां जा रहे हो? आओ, हम सब खेलें।

मुनमुन ठिठक गया। उसने मुड़कर देखा तो एक चट्टान के पास उसे एक साही दिखाई पड़ी। साही के कांटे जैसे नुकीले और लंबे बाल थे। वह बड़ी ही भद्दी दिखाई दे रही थी।

उसे देखकर मुनमुन ने नफरत से कहा, मैं भला तुम्हारे साथ कैसे खेल सकता हूं। तुम कितनी भद्दी दिखाई देती हो।

यह कहकर वह आगे बढ़ गया। कुछ और आगे जाने पर उसे एक पेड़ की डाल पर बैठा बंदर दिखाई दिया। बंदर केले खा रहा था। उसने मुनमुन को देखा तो कहा, भाई मुनमुन, अकेले कहां चल दिए? आओ, केले खाओ।

मुनमुन अच्छे दोस्तों की तलाश में निकला था। उसे पूंछ उचकाता मटमैला बंदर जरा भी अच्छा नहीं लगा।

वह मुंह बनाकर बोला, मुझे नहीं खाने तुम्हारे केले। मैं तो अकेला ही घूमने जाऊंगा।

यह कहकर मुनमुन कुलांचे भरता हुआ आगे बढ़ गया। आखिर चलते-चलते मुनमुन एक तालाब के किनारे पहुंचा। तालाब के किनारे एक सारस खड़ा था।

आओ आओ, मुनमुन भाई, मेरे साथ खाना खाओ, सारस ने कहा।

छि...छि....ये कांटेदार मछलियां और गंदे मेंढक मैं नहीं खाता, मुनमुन ने मुंह बनाकर कहा और आगे चल दिया।

अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसे एक भेड़िया मिला। भेड़िए ने मुस्कुराकर प्यार से कहा, मुनमुन भाई, आओ, हम दोस्त बन जाएं।

वह बोला, तुम मेरे दोस्त बनना चाहते हो, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

उसकी बात सुनकर भेड़िया उसके और नजदीक आ गया और बोला, मुनमुन, तुम बहुत अच्छे हो। मैंने तुम्हारे लिए कोमल-कोमल, ताजी और मीठी घास इकट्ठी कर रखी है। मेरे साथ जरा उस झाड़ी तक तो चलो। भेड़िया अब तक मुनमुन के बहुत पास आ गया था। सारस ने यह देखा तो जोर से टर्राकर बोला, मुनमुन भागो, वरना जान से हाथ धो बैठोगे। यह भेड़िया बहुत ही खतरनाक है। मुनमुन को सारस की बात समझ में आ गई। वह पीछे मुड़कर तेजी से भागा। भेड़िए ने उसका पीछा किया। जैसे ही भेड़िया मुनमुन पर झपटा कि साही लुढ़कती हुई भेड़िए के पंजे में आ गई। उसके कांटे जैसे बाल भेड़िए के पंजे में चुभ गए।

भेड़िया चीख उठा। उसने गुस्से में भरकर साही पर अपना दूसरा पंजा मारा पर साही के उठे हुए कांटे उस पंजे में भी बड़ी जोर से चुभ गए। वह तिलमिला गया। उसी समय बंदर ने एक लकड़ी उठाकर जोर से भेड़िए के सिर पर दे मारी। भेड़िए का सिर झन्ना गया और वह घबराकर भाग खड़ा हुआ।

मुनमुन एक झाड़ी के पास खड़ा थर-थर कांपता हुआ सब देख रहा था। वह सोच रहा था कि जिन लोगों से उसने मित्रता नहीं करनी चाही थी, उन्होंने ही उसकी जान बचाई।

मुनमुन सकुचाता हुआ साही, सारस और बंदर के पास आकर बोला, मित्रों, मुझे क्षमा कर दो। मैं तुम लोगों की मित्रता पहचान नहीं पाया था। अब तुम मुझे अपना मित्र बना लो।

मुनमुन की बात मानकर उन तीनों ने उसे अपना मित्र बना लिया।

संपादकीय

जो पैसा दे उसके लिए नाचते हैं बारात के घोड़े

जीत तो जीत होती है और हार तो हार होती है। चाहे विधानसभा चुनाव में जीत हो या राज्य सभा चुनाव में जीत हो जीतने वाला सफल माना जाता है और हारने वाला असफल माना जाता है,जीतने वाला हीरो होता है और हारने वाला जीरो होता है, जीतने वाले की जयजयकार होती है और हारने वालों में हाहाकार होता है। जीतने वाला इसलिए जीतता है कि उसने जीत की तैयारी की थी, हारने वाला इसलिए हार जाता है उसने जीत के लिए पूरी तैयारी नहीं की थी। चुनाव जीतने पर चुनाव जीतने का श्रेय नेतृत्व को भी जाता है और हार का ठीकरा भी नेतृत्व पर ही फोड़ा जाता है। इसलिए राज्यसभा चुनाव में कहा जा रहा है कि पीएम मोदी को कांग्रेस के विधायकों ने जिता दिया है और राहुल गांधी को कांग्रेस के विधायकों ने हरा दिया है।

राज्यसभा चुनाव 10 राज्यों की 37 सीटों के लिए हुआ। इसमें से तो संख्या बल के कारण भाजपा 37 में 26 सीटें निविरीध जीत गई थी और शेष 11 सीटों के लिए चुनाव हुआ और उसका रिजल्ट भाजपा के लिए वाह वाह करने वाला था तो विपक्ष के लिए हाय हाय करने वाला रहा। इन 11 सीटों में पांच सीटें बिहार की,चार सीटें ओडिशा की और दो सीटें हरियाणा की थी।भाजपा का बिहार में पांच में से चार सीटें जीतना तय था लेकिन भाजपा की प्रबंधन क्षमता का कमाल था कि वह बिहार की पांचो में से पांच सीटें जीत गई और बिहार में राजद को विधानसभा चुनाव के बाद फिर एक बार करारी हार का सामना करना पड़ा और इस हार के लिए तेजस्वी यादव बमबम है वह हार के लिए कांग्रेस को दोषी ठहरा रहे हैं क्योंकि कांग्रेस के तीन विधायक और राजद का भी एक विधायक वोट नहीं डाले और भाजपा को एक सीट ज्यादा मिल गई और राजद को मुंह की खानी पडी.तो कांग्रेस और अपने विधायक के कारण।

यही हाल ओडिशा में रहा। यहां चार सीटों के लिए चुनाव हुआ।यहां भाजपा ने अपने दो प्रत्याशी तो आसानी से जिता लिए और कमाल की कुशलता दिखाते हुए ऐसा प्रबंध किया उसने एक निदर्लीय को भी जिता लिया और यहां से एक सीट बीजू जनता दल ने जीती और कांग्रेस के हाथ कुछ नहीं आया क्योंकि कांग्रेस के विधायकों के क्रास वोटिंग के कारण ही निदर्लीय विधायक की जीत हुई है। हरियाणा में एक सीट पर भाजपा प्रत्याशी की जीत हुई है और दूसरी सीट से यहां कांग्रेस प्रत्याशी की जीत बड़ी मुश्किल से हुई तो इसलिए कि पांच वोट अमान्य कर दिए। ऐसा नहीं हुआ होता तो भाजपा यहां भी कांग्रेस को हरा कर निदर्लीय को जिता ले जाती। जैसा उसने ओडिशा में किया और बिहार में किया।राज्यसभा चुनाव में इंडिया ब्लाक को सात सीटों का नुकसान हुआ है चुनाव से पहले राज्यसभा में एनडीए की 136 सीटे थीं,जिनमें से 35 सीटों का परिणाम घोषित हुआ है। इसमें से 22 सीटें एनडीए के खाते में गई हैं। ऐसे में राज्यसभा मे एनडीए की सीटों की संख्या बढ़कर 123 हो गई है। इससे राज्यसभा में एन्ङाडीए की ताकत और बढ़ी है तथा विपक्ष पहले से कमजोर हुआ है।

राज्यसभा चुनाव में पहले क्रास वोटिंग का अंदेशा राजद बीजद, कांग्रेस को था इसके लिए कम से कम कांग्रेस ने अपने विधायकों को खरीदफरोख्त के बचाने के लिए राज्य से बाहर भी भेजा था, लेकिन उसका यह उपाय कोई काम नहीं आया । कांग्रेस के विधायकों ने ओडिशा के साथ ही बिहार में भी क्रास वोटिंग कर कांग्रेस के साथ ही विपक्ष को भी नुकसान पहुंचाया है। इसके लिए कांग्रेस नेतृत्व राहुल गांधी को भी दोष दिया जा रहा है कि वह अपने विधायकों को संभाल कर नहीं रख पाते हैं। उनके विधायक ही उनका कहना नहीं मानते हैं।कांग्रेस इसके लिए भले की भाजपा की आलोचना करे कि वह एक राज्यसभा सीट के लिए भी खरीदफरोख्त करने से बाज नहीं आती है लेकिन कमजोरी तो कांग्रेस नेतृत्व व पार्टी की है कि वह अपने विधायकों को संभाल कर रख नहीं पाते हैं। खरीद फरोख्त की बात आती है तो यह सवाल भी उठता है कि हमेशा कांग्रेस के विधायक ही क्यों बिक जाते हैं। खरीदने वाला कांग्रेस विधायकों को कैसे खरीद लेता है।

राहुल गांधी तो खुद कांग्रेस विधायकों की तुलना घोड़े से करते हुए कहते हैं कि जैसे घोड़े दो तरह के होते हैं एक रेस में दौड़ने वाले और दूसरे बारात में नाचने वाले उसी तरह कांग्रेस में विधायक व नेता भी दो तरह के हैं। रेस में दौडने वाले घोड़ों को तो कोई खरीद नहीं पाता है लेकिन बारात में नाचने वाले घोड़ों को कोई भी पैसा देकर नचा लेता है। यह सच है बारात में नाचने वाले घोड़ों की अपनी कीमत होती है और वह कीमत उनको जो देता वह उसके लिए नाचते हैं। ऐसे घोड़े कांग्रेस में होते हैं और ऐसे घोड़े ही बयान देते हैं कि कांग्रेस में सीएम से लेकर विधायक की टिकट के लिए पैसा देना पड़ता है और ऐसे घोड़े जब पैसा देकर विधायक बनते हैं तो जब मौका मिलता है तो वह बारात का घोड़े होने का पैसा वसूल भी कर लेते हैं। जो पैसा देकर टिकट खरीद सकता है,वह वोट देने के लिए पैसा लेता है तो इसलिए तो पैसा लेता है कि उसके पास पैसा होगा तो वह फिर टिकट खरीद लेगा।

टूट रहा है दुबई में बसने का सुनहरा सपना

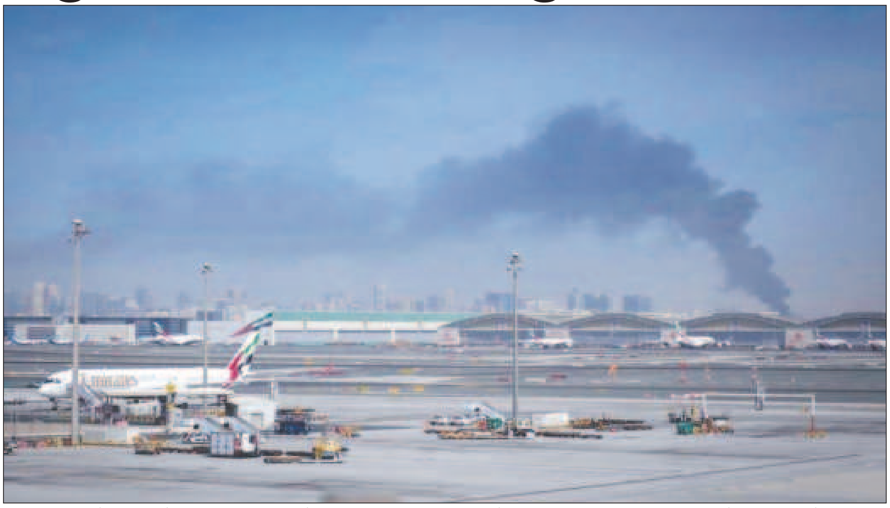

बीते कुछ सालों में भारत के कई बड़े उद्योगपति, निवेशक और उच्च आय वर्ग के लोग तेजी से दुबई और खाड़ी देशों की ओर रुख करते दिखाई दिए। कम टैक्स, वैश्विक जीवनशैली और आसान बिजनेस माहौल ने उन्हें आकर्षित किया। लेकिन, हाल के भू-राजनीतिक तनावों और क्षेत्रीय अस्थिरता ने इस प्रवृत्ति पर नए सवाल खड़े कर दिए। क्या वास्तव में दुबई जैसे देशों में बसना उतना सुरक्षित और स्थायी विकल्प है जितना माना जाता है, या फिर यह केवल टैक्स बचाने और विलासितापूर्ण जीवन की चाह का परिणाम है। यह सवाल अब गंभीर बहस का विषय बन चुका है। एक दशक में दुबई भारतीयों के लिए सबसे पसंदीदा विदेशी ठिकानों में से एक बनकर उभरा है। खासकर अमीर भारतीयों और उद्योगपतियों के बीच वहां बसने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। दुबई की रियल एस्टेट मार्केट में भारतीय निवेशकों की हिस्सेदारी लगातार बढ़ती गई और कई बड़े कारोबारी परिवारों ने वहां महंगी प्रॉपर्टी खरीदकर स्थायी निवास बना लिया। विदेश में बसना या निवेश करना कोई गलत निर्णय नहीं है। लेकिन केवल टैक्स बचाने या अल्पकालिक लाभ के लिए स्थायी रूप से देश छोड़ देना एक बड़ा फैसला होता है, जिसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

बीते कुछ सालों में भारत के कई बड़े उद्योगपति, निवेशक और उच्च आय वर्ग के लोग तेजी से दुबई और खाड़ी देशों की ओर रुख करते दिखाई दिए। कम टैक्स, वैश्विक जीवनशैली और आसान बिजनेस माहौल ने उन्हें आकर्षित किया। लेकिन, हाल के भू-राजनीतिक तनावों और क्षेत्रीय अस्थिरता ने इस प्रवृत्ति पर नए सवाल खड़े कर दिए। क्या वास्तव में दुबई जैसे देशों में बसना उतना सुरक्षित और स्थायी विकल्प है जितना माना जाता है, या फिर यह केवल टैक्स बचाने और विलासितापूर्ण जीवन की चाह का परिणाम है। यह सवाल अब गंभीर बहस का विषय बन चुका है। एक दशक में दुबई भारतीयों के लिए सबसे पसंदीदा विदेशी ठिकानों में से एक बनकर उभरा है। खासकर अमीर भारतीयों और उद्योगपतियों के बीच वहां बसने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। दुबई की रियल एस्टेट मार्केट में भारतीय निवेशकों की हिस्सेदारी लगातार बढ़ती गई और कई बड़े कारोबारी परिवारों ने वहां महंगी प्रॉपर्टी खरीदकर स्थायी निवास बना लिया।

इस आकर्षण के पीछे सबसे बड़ा कारण दुबई का टैक्स ढांचा है। दुबई में व्यक्तिगत आयकर नहीं है, जबकि भारत में उच्च आय वर्ग को 30 प्रतिशत तक टैक्स देना पड़ता है। यही कारण है कि कई लोग अपनी आय और संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए खाड़ी देशों में बसने का फैसला करते हैं। इसके अलावा दुबई का आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र के रूप में पहचान और अपेक्षाकृत आसान कारोबारी नियम भी लोगों को आकर्षित करते रहे हैं। हालांकि, दुबई जाने का कारण केवल टैक्स बचाना ही नहीं है। कई उद्योगपति और कारोबारी दुबई को वैश्विक व्यापार का प्रवेश द्वार मानते हैं। मध्य पूर्व, यूरोप और अफ्रीका के बीच स्थित होने के कारण दुबई व्यापार और लॉजिस्टिक्स के लिए एक रणनीतिक केंद्र बन चुका है। इसके अलावा दुबई में लग्जरी जीवनशैली, आधुनिक शहर, बेहतर परिवहन व्यवस्था और अपेक्षाकृत तेज प्रशासनिक प्रक्रियाएं भी आकर्षण का कारण हैं। कई भारतीय पेशेवर और उद्यमी मानते हैं कि दुबई में कारोबार शुरू करना और विस्तार करना भारत की तुलना में आसान और तेज है। लेकिन, हाल के समय में पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों ने इस आकर्षण पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

क्षेत्रीय संघर्षों और सुरक्षा संबंधी चिंताओं ने यह याद दिलाया है कि खाड़ी क्षेत्र पूरी तरह स्थिर नहीं है। जब भी पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ता है, तो वहां रहने वाले विदेशी नागरिकों की सुरक्षा

और भविष्य को लेकर चिंता बढ़ जाती है। ऐसे समय में कई लोग यह महसूस करने लगते हैं कि आर्थिक लाभ के बावजूद किसी दूसरे देश में स्थायी रूप से बसना हमेशा सुरक्षित विकल्प नहीं होता। इसके विपरीत भारत एक बड़ा लोकतांत्रिक और अपेक्षाकृत स्थिर देश है। यहां मजबूत संस्थाएं, स्वतंत्र न्यायपालिका और लोकतांत्रिक व्यवस्था है, जी नागरिकों को दीघर्कालिक सुरक्षा और अधिकार प्रदान करती है। भारत की अर्थव्यवस्था भी तेजी से बढ़ रही है और निवेश तथा उद्यमिता के नए अवसर लगातार सामने आ रहे हैं। स्टार्टअप इकोसिस्टम, डिजिटल अर्थव्यवस्था और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास ने देश को वैश्विक निवेश के लिए आकर्षक बना दिया है। ऐसे में कई विशेषज्ञ मानते हैं कि अल्पकालिक आर्थिक लाभ के लिए विदेश बसना हमेशा दीघर्कालिक रूप से सही फैसला नहीं होता।

एक और महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव का है। भारत छोड़कर विदेश में बसने वाले कई लोगों को समय के साथ यह महसूस होता है कि अपने समाज, संस्कृति और परिवार से दूर रहना आसान नहीं होता। दुबई जैसे देशों में भले ही भारतीय समुदाय बड़ा हो, लेकिन वहां की नागरिकता व्यवस्था और सामाजिक ढांचा अलग है। अधिकांश विदेशी नागरिकों को वहां स्थायी नागरिकता नहीं मिलती, जिससे उनका भविष्य हमेशा अनिश्चित बना रहता है।

हाल के वर्षों में यह भी देखने को मिला है कि कुछ लोग विदेश में रहने के बाद वापस भारत लौटने का निर्णय ले रहे हैं। भारत की बढ़ती आर्थिक संभावनाएं, तकनीकी विकास और बेहतर जीवन के अवसर इस बदलाव के पीछे प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा किए गए कई आर्थिक सुधारों और कारोबारी माहौल को बेहतर बनाने की कोशिशों ने भी निवेशकों का भरोसा बढ़ाया है।

दरअसल, विदेश में बसना या निवेश करना कोई गलत निर्णय नहीं है। लेकिन केवल टैक्स बचाने या अल्पकालिक लाभके लिए स्थायी रूप से देश छोड़ देना एक बड़ा फैसला होता है, जिसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जरूरी यह है कि लोग आर्थिक लाभ के साथ-साथ सुरक्षा, स्थिरता, सामाजिक जुड़ाव और भविष्य की संभावनाओं जैसे पहलुओं पर भी गंभीरता से विचार करें।

दुबई और खाड़ी देशों का आकर्षण अपनी जगह है, लेकिन हाल के घटनाक्रमों ने यह सवाल जरूर खड़ा किया है कि क्या केवल आर्थिक कारणों से विदेश बसना सही फैसला है। भारत आज तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और यहां अवसरों की कोई कमी नहीं है। ऐसे में शायद यह समय है जब लोग केवल टैक्स के नजरिए से नहीं, बल्कि दीघर्कालिक स्थिरता और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अपने फैसलों पर पुनर्विचार करें। लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

संवैधानिक मर्यादा का खुला उल्लंघन

अवधेश कुमार

पिछले दिनों पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और राज्य प्रशासन का राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के प्रति व्यवहार न केवल लोकतांत्रिक शिष्टाचार का उल्लंघन है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक चिंताजनक मिसाल भी है। ममता बनर्जी ने कहा कि राष्ट्रपति भाजपा के एजेंडा में फंस गई हैं। भाजपा उनसे अपना एजेंडा पूरा करवा रही है। आप 50 बार आएं तो सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होना संभव नहीं होगा। भाजपा की चिंता सत्ता होती है और मेरी चिंता मेरे राज्य की जनता होती है। यानी वह कह रही थीं कि आप भाजपा का एजेंडा पूरा करने के लिए बार-बार बंगाल आती हैं और उम्मीद करती हैं कि मैं आपके स्वागत के लिए रहूं तो ऐसा नहीं हो सकता। क्या ममता बनर्जी की इस तरह की भाषा और व्यवहार को सामान्य लोकतांत्रिक मर्यादा और संविधान की भावनाओं के अनुरूप भी माना जा सकता है?

ममता बनर्जी इसके पहले राज्यपाल से लेकर चुनाव आयोग, केंद्रीय जांच एजेंसियों और कई बार न्यायपालिका को भी इसी भाषा में आरोपित कर चुकी हैं। अभी तक राष्ट्रपति का पद उनके अपमान और दुर्व्यवहार से बचा हुआ था। राष्ट्रपति को आरोपित करना वास्तव में राजनीतिक पतन की पराकाष्ठा है। राष्ट्रपति के पद को स्तरहीन दलीय राजनीति से बाहर रखा जाना चाहिए। दरअसल राष्ट्रपति मुर्मु पश्चिम बंगाल में 9वां अंतरराष्ट्रीय संताल समारोह एवं कांफ्रेंस को संबोधित करने गई थीं। यह कार्यक्रम बागडोगरा हवाई अड्डा के पास सिलीगुड़ी महकमा परिषद के गोंसाईपुर में आयोजित किया गया।

पहले यह विधाननगर में आयोजित होना था, लेकिन बंगाल प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था एवं अन्य कारणों का हवाला देते हुए इसे स्थानांतरित कर दिया। नए स्थान तक पहुंचना कठिन था और इतना छोटा था कि ज्यादा लोग शामिल नहीं हो सकते थे। स्वाभाविक था कि राष्ट्रपति विधाननगर भी गईं, संथाल भाई-बहन वहां भी थे। वहां उन्हें राज्य सरकार के रवैये के प्रति अपना असंतोष प्रकट करने तथा सच्चाई अभिव्यक्त करने को बाध्य होना पड़ा। वस्तुतः बंगाल की धरती पर उतरने के समय से ही सरकार द्वारा राष्ट्रपति की अवहेलना और अपमान की शुरुआत हो गई थी।

सामान्य प्रोटोकाल और परंपरा के अनुसार राष्ट्रपति का स्वागत करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री या अगर किसी कारणवश वह नहीं आ सकें तो उनकी जगह कोई मंत्री रहते हैं। इसके साथ प्रदेश के पुलिस महानिदेशक और मुख्य सचिव भी उपस्थित रहते हैं, लेकिन राष्ट्रपति मुर्मु के स्वागत के लिए वहां ये नहीं थे। स्वतंत्र भारत में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ जब कोई राज्य सरकार राष्ट्रपति के कार्यक्रम के लिए उपयुक्त जगह की अनुमति न दे. उनकी पूरी तरह अवहेलना करे और असंतोष व्यक्त करने पर प्रतिक्रिया ऐसे दे जैसे अपने किसी राजनीतिक प्रतिस्पर्धी से टकरा रही है। राष्ट्रपति देश के संवैधानिक अभिभावक होते हैं। सभी को उस पद की गरिमा और स्थापित परंपरा के अनुरूप सम्मान देना होता है।

राष्ट्रपति की भावनाओं को मुख्यमंत्री के नाते ममता बनर्जी को गंभीरता से लेना चाहिए था, लेकिन बजाय इसके उन्होंने राष्ट्रपति को ही कठघरे में खड़ा कर दिया। उन्होंने यहां तक कहा कि सम्मेलन, उसकी फंडिंग, आयोजकों के बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं था। राष्ट्रपति के किसी प्रदेश में दौरे की सूचना राज्य सरकार के पास सबसे पहले जाती है। उसमें उनके सारे कार्यक्रम वर्णित होते हैं। राष्ट्रपति भवन के अधिकारी प्रदेश सरकार के साथ संपर्क में रहते हैं। उसके अनुसार उनका प्रोटोकाल, कार्यक्रम में सुरक्षा और अन्य व्यवस्थाएं होती हैं।

क्या ममता बनर्जी के प्रशासन ने राष्ट्रपति के कार्यक्रम के बारे में उन्हें जानकारी ही नहीं दी? अगर ऐसा है तो इसकी जांच होनी चाहिए, किंतु ममता के व्यवहार से ऐसा लगता नहीं कि उन्हें कुछ पता नहीं था।? बंगाल के मीडिया ने राष्ट्रपति की यात्रा और कार्यक्रम के बारे में समाचार दिए थे। सब कुछ सामने होते हुए इस तरह का व्यवहार और वक्तव्य साबित करता है कि ममता बनर्जी की हनक के समक्ष देश के शीर्ष पद का भी कोई सम्मान नहीं।

राष्ट्रपति की उपस्थिति वाले जनजाति समाज के कार्यक्रम के प्रति जब ऐसा खराब व्यवहार है तो फिर सामान्य संगठन और राजनीतिक दलों के कार्यक्रम के साथ प्रशासन का कैसा व्यवहार होता होगा इसकी कल्पना कीजिए? बंगाल में जनजाति समुदाय की बड़ी संख्या है। स्वतंत्रता के संघर्ष में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वयं राष्ट्रपति जनजाति समुदाय से आती हैं। ममता बनर्जी स्वयं को आदिवासी समाज के लिए संघर्ष करने वाली और उनका हितैषी घोषित करती हैं।

विडंबना देखिए कि सभी? भाजपा विरोधी दल इस पर मौन हैं। इन दलों का व्यवहार हतप्रभ करने वाला है। राष्ट्रपति कह रही हैं कि ऐसी स्थिति पैदा की गई, ताकि कार्यक्रम न हो और उन्हें वापस जाना पड़े। विवेकशील लोगों को विचार करना पड़ेगा कि क्या सत्ता की राजनीति इस सीमा तक चली जाएगी, जहां प्रशासन द्वारा राष्ट्रपति के कार्यक्रम की व्यवस्था करने की जगह उसे हर स्तर पर विफल कर देने का व्यवहार हो? ऐसे व्यवहार का प्रतिकार होना चाहिए, ताकि आगे कभी इसकी पुनरावृत्ति न हो सके। अगर ऐसा नहीं हुआ तो देश इस तरह की भयानक अराजकता में फंसेगा, जहां किसी पद या विधान की मर्यादा नहीं बचेगी।

मस्तिष्क की सेहत पर मंडराता प्लास्टिक कणों का खतरा

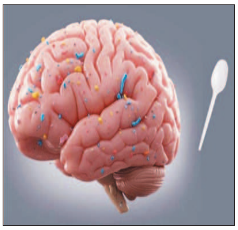

मुकुल व्यास

प्लास्टिक के सूक्ष्म कण पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनते जा रहे हैं। माइक्रोप्लास्टिक के कण अथवा प्लास्टिक के छोटे-छोटे टुकड़े हवा से लेकर पानी और खाने तक हर चीज में पाए गए हैं। अब डोनेट किए गए 52 मानव मस्तिष्कों पर हुए एक अध्ययन से इस बात की पुष्टि हुई है कि ये माइक्रोप्लास्टिक कण मस्तिष्क के अंदरूनी हिस्सों में जमा हो सकते हैं। शोधकर्ताओं को मस्तिष्क के हर सैंपल में पॉलीइथाइलीन और दूसरे पॉलिमर के निशान मिले और उन्होंने देखा कि हाल के सैंपल में पुराने सैंपल के मुकाबले इनकी मात्रा ज्यादा थी।

वैज्ञानिकों ने पाया कि 2024 में लिए गए सैंपल में प्लास्टिक की मात्रा 2016 में देखी गई मात्रा से अधिक थी, जिससे पता चलता है कि मस्तिष्क में माइक्रोप्लास्टिक का स्तर लगातार बढ़ रहा है। नई रिसर्च का नेतृत्व अमेरिका को न्यू मेक्सिको यूनिवर्सिटी में टॉक्सिकोलॉजी के प्रोफेसर मैथ्यू कैम्पेन ने किया है। उन्होंने माइक्रोप्लास्टिक के उपयोग में सावधानी बरतने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा दुनियाभर में बढ़ता प्लास्टिक उत्पादन प्रदूषण की एक मुख्य वजह है।

विशेषज्ञों ने यह भी जांच की कि क्या कुछ खास परिस्थितियां इन वस्तुओं के जमाव को और बढ़ा देती हैं। उन्होंने डिमेंशिया के मरीजों के एक ग्रुप को देखा जिनके मस्तिष्क में दूसरे सैंपल के मुकाबले तीन से पांच गुना ज्यादा प्लास्टिक के कण थे। वैज्ञानिक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से देखे गए टुकड़ों के आकार देखकर हैरान गए। इन टुकड़ों में साफ-सुथरे गोलों के बजाय, कई दांतेदार, परत जैसी संरचनाएं थी। ऐसे ऊबड़-खाबड़ आकार वाले माइक्रोप्लास्टिक बिकने, गोल आकार वाले माइक्रोप्लास्टिक की तुलना में कोशिकाओं के साथ अलग तरीके से क्रिया कर सकते हैं। पहले किए गए अनेक अध्ययनों में

विभिन्न मानव अंगों, जैसे रक्त धमनियों, किडनी और प्लेसेंटा में प्लास्टिक के अपशिष्ट पाए गए हैं। प्रयोगशाला में चूहों के मॉडल पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि थोड़े समय के लिए सिंथेटिक पार्टिकल के संपर्क में आने से भी कई अंगों में सूजन हो सकती है। कुछ वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इन पार्टिकल की वजह से खास बीमारियों का पता लगाना मुश्किल ही सकता है क्योंकि प्लास्टिक का संपर्क लगभग हर जगह होता है।

एक अन्य रिसर्च टीम ने देखा कि मस्तिष्क के ऑलफैक्ट्री बल्व में माइक्रोप्लास्टिक मौजूद थे, जिससे पता चलता है कि इन टुकड़ों के नर्वस टिशू में घुसने के कई रास्ते हैं। ध्यान रहे कि ऑलफैक्ट्री बल्ब मस्तिष्क का वह हिस्सा है जहां गंध की प्रोसेसिंग होती है। नई रिसर्च इस बात के प्रमाण देती है कि माइक्रोप्लास्टिक कण मस्तिष्क के फ्रंटल कॉर्टेक्स में और भी गहराई तक जा सकते हैं। ये कण मस्तिष्क की कुशाग्रता या दूसरे कार्यों पर कैसे असर डाल सकते हैं, इस बारे में बहुत सारे सवाल हैं जिनके जवाब नहीं मिले हैं। कुछ वैज्ञानिक बताते हैं कि डिमेंशिया वाले लोगों के दिमाग में अक्सर फिल्टरिंग सिस्टम कमजोर हो जाते हैं, जिससे यह साफनहीं होता कि प्लास्टिक की ज्यादा मात्रा ऐसी स्थितियों में योगदान करती है या यह मात्रा इसलिए ज्यादा होती है क्योंकि दिमाग उन्हें ठीक से साफनहीं कर पाता।

जानवरों पर किए गए एक अध्ययन में माइक्रोप्लास्टिक के संपर्क की याददाश्त में मामूली बदलाव और मस्तिष्क के कुछ हिस्सों में शुरुआती सेलुलर स्ट्रेस (कोशिकीय तनाव) के संकेतों से जोड़ा गया है। पयर्वेक्षकों का मानना है कि इंसानों पर हुए अध्ययन में यह साफ होने में सालों लग सकते हैं कि क्या माइक्रोप्लास्टिक कण सीधे स्नायु संबंधी दिक्कतें लाते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी जिस तरह प्लास्टिक का व्यापक इस्तेमाल हो रहा है और जिस तरह सूक्ष्म प्लास्टिक हवा, खाने और पानी के जरिए हर जगह फैल रहा है, उसे देखते हुए इस समस्या का कोई जल्दी समाधान नहीं निकल सकता।

कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि जब माइक्रोप्लास्टिक को दिमाग और दूसरे जरूरी अंगों में जाने से रोकने के लिए औद्योगिक अपशिष्ट के निपटान के बारे में कड़े नियम बनाना बहुत जरूरी है। कुछ अन्य विशेषज्ञों ने कहा कि किस प्लास्टिक की छोटे-छोटे टुकड़ों में विखंडित होने की सबसे ज्यादा संभावना है, इस पर हमें और डेटा की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक कणों के आकार और रासायनिक बनावट में अंतर मायने रखता है।

समुद्री जीव वैज्ञानिकों ने बताया है कि समुद्रों में प्लास्टिक के कचरे के बारे में शुरुआती चेतावनियों को ज्यादातर नजरअंदाज किया गया था, इसलिए इंसानी सेहत के लिए जरूरी उपायों को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। यूनिवर्सिटी ऑफ प्लायमाउथ के प्रोफेसर रिचर्ड थॉम्पसन ने कहा है कि इन प्लास्टिक कणों को सेहत के नतीजों से जोड़ना एक बड़ी चुनौती है। थॉम्पसन ने ही सबसे पहले 'माइक्रोप्लास्टिक' शब्द का इस्तेमाल किया था। प्लास्टिक कणों का पता लगाने के नए तरीके वैज्ञानिकों की वह देखने में मदद कर रहे हैं जो कभी दिखाई नहीं देता था।

पिछले दस सालों में एडवांस्ड इमेजिंग टूल्ज़ और रासायनिक विश्लेषण ज्यादा सटीक हो गए है, जिससे नतीजों पर भरोसा बढ़ता है। फिर भी, कई लोगों को चिंता है कि समस्या मौजूदा टेस्टों से ज्यादा बड़ी हो सकती है। अध्ययनों में अर, स्वास्थ्य को स्थिति और लाइफस्टाइल के फैक्टर्स का मुद्दा भी उठाया गया है, जो एक व्यक्ति के शरीर में दूसरे की तुलना में माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा पर असर डाल सकते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक की इतनी विविधता होने से इसके हानिकारक प्रभाव का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। पॉलीस्टाइनिन, पॉलीप्रोपाइलीन और पॉलीइथाइलीन का आमतौर पर जिक्र किया जाता है, लेकिन दूसरे पॉलीमर भी मौजूद रहते हैं।

कुछ छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं, जबकि दूसरे रेशों में बदल जाते हैं जो टिश में उलझ सकते हैं। विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा कि माइक्रोप्लास्टिक से घबराने की कोई बात नहीं है लेकिन इसके बारे में जागरूकता रहनी चाहिए। ज्यादा जागरूकता से मैन्युफैकरिंग के तरीकों, उपभोक्ता की पसंद और अवशिष्ट प्रबंधन में बदलाव आ सकते हैं। जैसे जैसे ग्लोबल प्लास्टिक का उत्पादन बढ़ेगा, भविष्य में इन प्लास्टिक कणों के अधिक स्तर को रोकने के लिए और कदम उठाने होंगे। माइक्रोप्लास्टिक के बारे में भले ही कुछ सवाल बने रहें, वैज्ञानिकों का कहना है कि इंसानों, जानवरों और प्रयोगशाला में लगातार मिले नतीजे सावधानी बरतने की जरूरत की ओर इशारा करते हैं। माइक्रोप्लास्टिक दिमाग की कोशिकाओं या रक्त धमनियों को कैसे नुकसान पहुंचा सकता है, इसकी गहरी समझ से बचाव के रास्ते खुल सकते हैं।

बेहतर सेहत के लिए कहां रहें गांव या शहर?

यह कोई अचानक की शुरू हुई चर्चा नहीं है बल्कि पिछले डेढ़ दो दशकों से शहरों में, खासकर महानगरों में खाते पीते लोगों के बीच यह चर्चा बहुत जोर शोर से चल रही है कि बेहतर सेहत के लिए आखिर कहां रहें? कुछ लोग इस चर्चा में शहरों में रहने के पक्षधर हैं, तो कुछ दूसरे लोग जिनकी तादाद थोड़ी ज्यादा है, वे गांवों की वकालत करते हैं। कहना नहीं होगा कि हाल के सालों में अच्छी खासी संख्या में शहरों में ठीकठाक अर्थव्यवस्था वाले लोग आमतौर पर रिटायर होने के बाद फिर से गांव में जाकर बसने का सिलसिला शुरू कर चुके हैं। लेकिन यह सिलसिला इसलिए नोटिस में कम आ रहा है, क्योंकि हाल के दशकों में गांवों से शहरों की ओर पलायन में बहुत ज्यादा तेजी आयी है।

बहरहाल जो लोग सेहत के लिए शहरों को सही नहीं मान रहे, लेकिन किसी गांव में जाकर रहने की उनके पास व्यवस्था नहीं है, ऐसे तमाम लोग भी हाल के सालों में बड़े शहरों की घनी आबादी वाले इलाकों को छोड़कर बड़े शहरों के इर्दगिर्द बसे उपनगरों में रहना शुरू किया है। कहने का मतलब यह कि यह धारणा काफी मजबूत हो चली है कि बेहतर स्वास्थ्य के लिए खासकर खराब पर्यावरण से बचने के लिए बड़े शहरों की बजाय गांव में रहना ज्यादा फायदेमंद है। लेकिन क्या यह वास्तव में सही है? रिसर्च इस धारणा को वैज्ञानिक कसौटी में सही करार नहीं देते।लेकिन शायद यह आज की तारीख में भारत के महानगरों में बड़े पैमाने पर बसे लोगों की गांव की पृष्ठभूमि है, जो उन्हें शहरों के विपरीत गांवों के प्रति आकर्षित कर रही है। कहने का मतलब यह कि ज्यादातर लोग महज भावनाओं के आधार पर गांवों को सेहत के लिए शहरों से बेहतर मान रहे हैं।

अगर वैज्ञानिक कसौटियों पर शहरों और गांवों, दोनों की खूबियों और खामियों का ईमानदारी से विश्लेषण करें तो पता चलता है कि गांव हो या शहर सेहत की कसौटी पर श्यामश्वेत ढंग से किसी एक के पक्ष में निर्णय देना कठिन है। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि सेहत के लिहाज से गांव में रहना कुछ मामलों में फायदेमंद है। वहां की हवा में प्रदूषण कम है, शहरों के मुकाबलें गांवों हरियाली ज्यादा है। लेकिन यह बात भी सही है कि गांवों में सेहत के लिए कई दूसरी तरह की समस्याएं हैं, जिन्हें न तो नजरअंदाज किया जा सकता है और न ही तुलना करने पर उनके कारण गांवों को हर लिहाज से हम शहरों से बेहतर पाते हैं।

इसकी कई वजहें हैं। अगर हमारी परवरिश गांव में नहीं हुई तो एक उम्र के बाद जाकर गांव में बस पाना संभव नहीं है। अगर हमारे शौक और जिंदगी के ज्यादातर समय किये गये काम ऐसे हैं, जो गांवों के वातावरण में फिट नहीं बैठते, तो भी आप एक उम्र के बाद गांव में नहीं रह सकते। न सिर्फ जीवनशैली के लिहाज से बल्कि सेहत के नजरिये से भी। अगर हम हरियाली के नजदीक रहते हैं तो दो बातें निश्चित होती हैं। हम प्रदूषण से बचे रहते हैं या कम प्रभावित होते हैं। इस कारण तनाव से भी किसी हद तक दूर रहते हैं और इससे सेहत में सकारात्मक असर होता है। लेकिन सिर्फ हरियाली क्या कर लेगी, अगर गांव में हमारे लिए पीने का साफ पानी नहीं है, आसानी से उपलब्ध होने वाली दवाएं नहीं है, चलने फिरने के लिए सही सड़के नहीं हैं और दूसरी कई सुविधाएं नहीं हैं। हरियाली की नजदीकी हमारे शरीर में लिम्फोसाइट्स नाम की एक किलर सेल पैदा करती है, जो शरीर में किसी भी वजह से मौजूद मृत और बीमार कोशिकाओं को खत्म करके नई और स्वस्थ कोशिकाएं पैदा करती है। लेकिन सेहत के बड़े परिदृश्य में देखने से यह कोई आमूलचूल फायदे वाला परिवर्तन नहीं है।

झीलों का नगर है भोपाल

भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल कई मायनों में सबसे अलग पहचान रखती है। ताल तलैयों और झीलों के इस खूबसूरत शहर की हरियाली मानों प्रकृति ने उपहार के रूप में प्रदान की हो।

कभी जर्दा, पर्दा और गर्दा के लिए मशहूर रहे भोपाल के ठाट अभी भी नवाबी ही हैं। शोले फिल्म में एक किरदार सूरमा भोपाली ने देश भर में भोपाली शब्द को लोगों की जुबान पर ला दिया था। आवागमन के साधन राजधानी होने की वजह से यहां सहज सुलभ हैं। ईदगाह हिल्स पर बना नानक टेकरी गुरुद्वारा इतिहास का मूक गवाह है। कहा जाता है कि कुष्ठ रोग से पीड़ित को गुरु नानक देव जी ने कष्टों से मुक्ति प्रदान की थी। यहाँ एक शिला पर नानक जी के पद चिन्ह आज भी अंकित हैं। गुरुद्वारे में स्थित संग्रहालय में ऐतिहासिक महत्त्व की अनेक वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। लगभग एक घंटा वहाँ बिताकर हमने गुरु का प्रसाद ग्रहण किया और अपने अगले पड़ाव की ओर प्रस्थान किया।

भोपाल का मरीन ड्राइव कहे जाने वाले शान-ए-भोपाल में शाम से ही पर्यटकों का जमावड़ा शुरू हो जाता है। बड़ी और छोटी झील को अलग करते ओवर ब्रिज पर पैदल घूमने का अपना अलग आनंद है। झील में नौका विहार का मजा भी लिया जा सकता है। पर्यटन विकास निगम द्वारा इस जगह को काफी विकसित किया जा चुका है, जहां संगीत के आनंद के अलावा सभी तरह की नावें उपलब्ध हैं। यह स्थल भोपाल भ्रमण को यादगार बनाने के लिए काफी है। मछली के आकार का बना मछलीघर छोटी झील के पास स्थित है। इस में प्रायः सभी प्रजातियों की रंगबिरंगी मछलियां हैं। यहाँ की बड़ी झील जहाँ समुद्र का नजारा देती है वहीं झील के पीछे स्थित 444 हेक्टेयर में फैले वनविहार में हर तरह के पशु पक्षी विचरते हैं। इस सफारी पार्क में पशुपक्षियों का स्वच्छंद विचरण देखते ही बनता है। एशिया की सबसे बड़ी ताज जल मस्जिद का निर्माण शाहजहां बेगम (1868-1901) ने आरंभ करवाया था। इस बेगम की मौत के बाद अधूरी बनी इस मस्जिद का निर्माण कार्य 1911 में फिर शुरू हुआ था। मस्जिद का मुख्य कक्ष तो भव्य है ही मगर मेहराबदार छत और चमचमाता संगमरमर का फर्श भी कम आकर्षक नहीं। हर साल यहाँ इज्तिमा का मेला लगता है जब दुनिया भर के मुस्लिम धर्मावलंबी नमाज पढ़ने आते हैं। भोपाल की मोती मस्जिद और जामा मस्जिद का शिल्प दिल्ली की जामा मस्जिद के नमूने पर आधारित है। इसे 1860 में बेगम सिकंदर जहां ने बनवाया था।

भोपाल से 28 किलोमीटर की दूरी पर बना भोजपुर का मंदिर पूरब का सोमनाथ कहा जाता है जिसे राजा भोज ने 10वीं सदी में बनवाया था। शानदार वास्तुकला के उदाहरण इस शिवमंदिर का बाहरी प्रांगण 66 फुट तक फैला है। मूलतः वर्गाकार बना यह मंदिर नीचे से अष्टभुजाकार है। कारीगरी के उत्कृष्ट कार्य इस मंदिर में दिखते हैं। करीने से तराशा गया यह मंदिर ऐतिहासिक महत्त्व का है जो कभी पूरा नहीं बन पाया। प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर यहां विशाल मेला लगता है जिसमें भाग लेने दूर-दूर से लोग आते हैं। भोपाल से 40 किलोमीटर दूर स्थित भीमबैठका को अब विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया है। यहां के प्रदर्शित 700 शैलाश्रय नव पाषाण युग के हैं जो प्रतीक चित्रों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को उकेरते नजर आते हैं। प्रागैतिहासिक गुफाओं के भित्तिचित्र मानव की सामान्य अभिव्यक्ति व जानकारियों की गवाही ही देते हैं। चित्रांकन के लिए यहां सफेद व लाल रंग का प्रयोग यादा किया गया है। इतिहास में रूचि रखने वालों के लिए स्थल महत्त्वपूर्ण है।

रोग भगाए लौंग

लौंग का लेटिन नाम साईजिमियम ऐरोमेटिकम है। यह पाचक, नेत्रों के लिए हितकारी, क्षय रोग का नाश करने वाली है। यूं लौंग कई रोगों में फायदेमंद है, इसके विविध औषध गुण इस प्रकार है-

- दो लौंग तवे पर सेक कर चूसें। इससे खांसी के साथ कफ आना ठीक हो जाता है तथा कफ की दुर्गन्ध भी दूर हो जाती है।
- लौंग और अनार के छिलके समान मात्रा में पीस कर चुटकी भर चूर्ण शहद से नित्य तीन बार चाटने से खांसी ठीक हो जाती है।
- लौंग को पीसकर लेप करने से सिर दर्द तुरन्त बंद हो जाता है।
- दांत में कीड़ा लगने पर लौंग को रखना या लौंग का तेल लगाना चाहिए।
- पान खाने से जीभ कट गई हो तो एक लौंग मुंह में रखने से जीभ ठीक हो जाती है।
- ज्वर से छुटकारा पाने के लिए एक लौंग पीसकर गर्म पानी से फंकी ले।
- प्यास की तीव्रता होने पर उबलते पानी में लौंग डालकर सेवन करें, इससे प्यास कम हो जाती है।
- लौंग को आग में भूनकर शहद में मिलाकर चाटने से कूकर खांसी ठीक हो जाती है।
- खाना खाने के बाद एक-एक लौंग सुबह-शाम खाने से या शर्बत में लेने से अम्ल पित्त से होने वाले सभी रोगों में लाभ होता है और अम्लपित्त ठीक हो जाता है।
- मुंह और सांस की दुर्गन्ध दूर करने के लिए लौंग चबाएं।
- कमरदर्द पर लौंग का तेल मलने से कमर दर्द दूर होता हैं।

आधुनिक किचन बहुद्देशीय से बनी बहुविकल्पीय

आधुनिक रसोइयों में परंपरागत व समकालीन का मिश्रण दिखाई देगा। ऐसी लाइनें दिखाई देंगी, जो परंपरागत से अधिक साधारण होंगी, लेकिन समकालीन से अधिक मुखर व परिभाषित होंगी। इस डिजाइन को भविष्य में सबसे ज्यादा पसंद किया जाएगा व यही मांग में रहेगा।

आजकल लोग समकालीन रसोई कैबिनेटों को प्राथमिकता देते हैं, जिनमें फोल्डिंग डोर्स हों, ताकि जगह को बचाया जा सके। यह देखने में भी शानदार लगते हैं और फंक्शनल, यानी-उपयोगी होते हैं। इनसे सामान रखने की दराजों या किचन एप्लायंस को छुपाकर रखा जा सकता है। जरूरत साफ व स्टाइलिश डिजाइन की है, जिसमें बोल्ड रंग हों, स्टाइलिश व समकालीन फ्लेवर हो और आधुनिक इंटीरियर हो।

- अगर रसोई का स्थान बड़ा है, तो उसमें सिंक, रेफ्रिजरेटर की दराज, डिश वॉशर व अतिरिक्त कुकिंग एरिया को जोड़ा जा सकता है, जिससे आपकी रसोई अधिक फंक्शनल व उपयोगी हो जाती है। चूंकि, बड़ी रसोई में प्लम्बिंग व इलेक्ट्रिकल सेवाओं के लिए भी गुंजाइशें होती हैं, इसलिए उनमें विकल्पों की अपार संभावनाएं होती हैं। अगर आप अपने स्टोव या ग्रिल पर हुड लगा देते हैं, तो आपकी रसोई न सिर्फ कुकिंग के लिए, बल्कि मनोरंजन के लिए भी एक अच्छा द्वीप बन जाती है।
- आजकल एक समकालीन रसोई को इस तरह डिजाइन किया जाता है कि वह अधिक आरामदायक व आकर्षक हो। साथ ही, उसे इस प्रकार सजाया जाता है कि उसमें नयापन दिखाई दे। सुंदर फेब्रिक्स ग्लास की सतह एलईडी लाइटों के साथ, आकर्षक लाइटिंग सेट्स डिनर के लिए व कार्यक्षेत्र के लिए, सेंसर व टेक्टाइल स्विच किचन केबिनेट के लिए, सभी आधुनिक रसोइयों का हिस्सा बन गए हैं।
- एक नया ट्रेंड आधुनिक किचन डिजाइन में किचन हुड है, जो न केवल फंक्शनल व प्रभावी है, बल्कि बहुत अधिक सजावटी भी होता है। हुड बुनियादी तौर पर उस चिमनी को कहते हैं, जो स्टोव के ऊपर लगाई जाती है, ताकि तमाम धुआं व गैस बाहर निकल सके। इसके दो फायदे हैं, एक- किचन गंदा नहीं होता और दूसरा यह, कि- कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैसें रसोई से बाहर निकल जाती हैं।
- इस बात से स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि गृह स्वामी अपनी रसोई को डिजाइन व कस्टमाइज करने के लिए अधिक सोच, पैसा व जगह लगाने के लिए तैयार हैं। इसमें वह टेक्नोलॉजी व विशिष्ट डिजाइन तत्वों का सहारा ले रहे हैं। साथ ही, ऐसी चीजों का चयन कर रहे हैं, जिनके साथ काम करना आसान हो व देखने में भी वह आकर्षक हों। अगर आप अपनी रसोई को पूर्णतः आधुनिक बनाए रखना चाहते हैं, तो उसमें भरपूर स्टेनलेस स्टील फर्निश, बारीक धारियों व चमकदार सफेद का प्रयोग करें, ताकि वह समकालीन शैली के अनुरूप हो जाए। नए युग के पदार्थों का चयन करें, कार्य की मुख्य जगह के लिए, ताकि रसोई में गहराई आ सके।
- आजकल का ट्रेंड ऐसे किचन केबिनेट्स चुनने के संदर्भ में जो लकड़ी के बने हों व उन पर एल्यूमीनियम का फ्रेम हो, साथ ही उनमें लाइट पैनल्स व दरवाजे हों। काउंटरटॉप व रसोई के बीच के हिस्से के लिए भी लकड़ी की चीजें इस्तेमाल की जा रही हैं, जो कि लुक में समकालीन हों व साथ ही ग्लास से टेम्पर्ड हों। उनमें एलईडी लाइट्स, मारबल व प्राकृतिक पत्थर भी लगाए जा रहे हैं।
- काफी समय से रसोइयों को इस तरह से डिजाइन किया जा रहा है कि उनमें भीड़-भाड़ कम व खुलापन अधिक हो और साथ ही, भोजन करने का स्थान भी उन्हीं में जोड़ दिया जाए। यह ट्रेंड भी जारी रहेगा, क्योंकि लोगों को सादगी व सुविधा पसंद आती है।
- आधुनिक ट्रेंड के तहत रसोइयों में कंट्रास्ट रंग प्रयोग किए जा रहे हैं। मसलन, लकड़ी के गहरे रंग किचन के सफेद डिजाइन से कंट्रास्ट करते हैं। आकर्षक वॉल पैनल व खुली शेल्फ समकालीन किचन डिजाइन को अधिक दिलचस्प व अनौपचारिक बना देती हैं।

सुंदरता की दुश्मन ना बन जाएं झुर्रियां

बढ़ती आयु के साथ-साथ त्वचा की तेल ग्रंथियां निष्क्रिय होने लगती हैं। इसी कारण त्वचा शुष्क हो जाती है और झुर्रियां दिखाई देने लगती हैं। कुदरत की देन को रोका तो नहीं जा सकता, लेकिन अगर आप चाहें, तो उन्हें कम किया जा सकता है।

- दिन में तीन-चार बार ठंडे पानी से चेहरा धोएं। ऐसा करने से मांसपेशियों का व्यायाम भी हो जाता है और त्वचा खिली रहती है।
- चेहरे पर साबुन का प्रयोग कम से कम करें, क्योंकि साबुन से प्राकृतिक तेल कम हो जाते हैं और त्वचा की चमक कम होती है।
- त्वचा पर गर्म पानी का उपयोग कम करें। इससे त्वचा रूखी हो जाती है और झुर्रियां जल्दी पड़ती हैं।
- संतुलित और पौष्टिक आहार नियमित लें, जिससे त्वचा को खुराक मिलती रहे और त्वचा में चमक बनी रह सके।
- भोजन में ताजा फल, सब्जियों और प्रोटीन की मात्रा नियमित लेनी चाहिए।
- सप्ताह में कम से कम झुर्रियों वाली त्वचा पर दही और बेसन का पैक लगाएं। फिर दस मिनट बाद त्वचा धो लें।
- रात को सोते समय चेहरे पर मलाई की मालिश कर लें, तो त्वचा पर धूप का प्रभाव कम पड़ेगा। चेहरे की त्वचा का रूखापन कम होगा तथा त्वचा मुलायम रहेगी।
- चेहरे, गर्दन और बाजुओं का मैल हटाने के लिए साबुन के स्थान पर अच्छी कंपनी का फेस वाश लगाएं या चंदन पाउडर और बेसन का पेस्ट लगाकर शीघ्र गीले हाथ से रगड़ कर मैल हटा लें। चेहरा चमकने लगेगा।
- झुर्रियों से बचने के लिए दही, बेसन और दूध से चेहरे और गर्दन को साफ करें।
- ग्लिसरीन में गुलाब की पत्तियों को पीसकर मिला लें। उसे लगाने से रंग साफ होता है और झुर्रियां भी शीघ्र त्वचा पर नहीं पड़तीं।
- दिन में पानी अधिक से अधिक पीएं, ताकि त्वचा में नमी बनी रहे।
- चेहरे, गर्दन और बाजुओं की मालिश किसी अच्छी क्रीम से करते रहें, ताकि ढीली त्वचा में कसाव बना रहे। नहाने से पूर्व शरीर पर तेल की मालिश करें।
- तेज धूप में निकलने से पूर्व चेहरे की त्वचा पर सनस्क्रीन लोशन लगाएं, धूप का चश्मा पहनें और छाता लेकर निकलें।

बाल कहानी

प्रकृति की संतान

एक बार फागुन की मुलाकात सावन से हो गई तो वह बोला, भाई सावन, तुम किसी दिन मेरे घर आओ न। सावन ने कहा, अवसर मिलेगा तो अवश्य आऊंगा। यह कहकर सावन अपने घर चल पड़ा। फागुन ने भी अपनी राह पकड़ी।

काफी दिनों बाद सावन को जब याद आया तो वह फागुन से मिलने उसके घर की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचा तो देखा कि फागुन का घर खूब साफ-सुथरा, लिपा-पुता है। अंदर नए-नए पकवान बन रहे हैं। आस-पड़ोस के लोग भी अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए हैं। खेतों में गेहूं, जौ की बालियां लहलहा रही हैं। मटर पक चुके हैं। सरसों की डालियां झुक गई हैं। आमों में बौर आने लगे हैं। चारों ओर चिड़ियां चहक रही हैं। फागुन ने खुशी से झूम-झूमकर सावन को अपनी समृद्धि दिखाई। अंत में स्वादिष्ट भोजन कराकर उसे विदा किया।

चलते समय सावन ने कहा, भाई फागुन, किसी दिन मौका निकालकर हमारे यहां भी आओ।

फागुन ने कहा, जरूर।

कुछ दिनों के बाद फागुन जब सावन के घर गया तो देखा कि नदी-नाले सभी ओर भरे पड़े हैं। काले-काले बादल आकाश में छाए हुए हैं और बिजली रह-रहकर चमक रही है। सावन के घर का रास्ता कीचड़ से भरा पड़ा है। मेंढक टर्रा रहे हैं। मच्छर काटने को तैयार हैं।

कुछ दिनों के बाद फागुन जब सावन के घर गया तो देखा कि नदी-नाले सभी ओर भरे पड़े हैं। काले-काले बादल आकाश में छाए हुए हैं और बिजली रह-रहकर चमक रही है। सावन के घर का रास्ता कीचड़ से भरा पड़ा है। मेंढक टर्रा रहे हैं। मच्छर काटने को तैयार हैं। चारों ओर गंदगी का साम्राज्य है। किसी तरह वह सावन के घर पहुंचा।

फागुन को देखते ही सावन खुशी से झूम उठा और उसे गले से लगा लिया। फागुन के कपड़े गीले हो गए थे। सावन ने तुरंत अपने पास से उसे सूखे कपड़े दिए।

फागुन काफी दूर से आ रहा था। काफी थक गया था। भूख भी उसे जोर की लगी थी, इसीलिए सावन ने तुरंत खाने के लिए उसे सब्जी और पूड़ी लाकर दी।

फागुन नाक-भौं सिकोड़ते हुए खाने लगा। खाने के बाद फागुन अकड़कर बोला, भाई सावन, तुम्हारे घर के चारों ओर तो बहुत पानी, कीचड़ और गंदगी है। तुम इस जगह कैसे रहते हो?

सावन हंसकर बोला, भाई फागुन, अगर यह कीचड़ और पानी न फैलाएं और नदी-नाले न भरें तो तुम ये अच्छे-अच्छे कपड़े और अच्छे-अच्छे पकवान कहां से पाओगे? फिर तो तुम्हारे बागों में बसंत ही न दिखाई पड़ेगा। अगर नाराज न हो तो कहूं, तुम्हारा यह ठाट-बाट कीचड़ और पानी की देन है। इसलिए इससे घृणा नहीं करनी चाहिए।

सावन की बातों को सुनकर फागुन मन ही मन बहुत लज्जित हुआ और बोला, भाई सावन, मुझसे भूल हो गई। हम तुम एक ही प्रकृति की संतान हैं। इसलिए न कोई बड़ा है और न कोई छोटा, न कोई ऊंचा और न कोई नीचा।

यह है आत्मविश्वास बढ़ाने की कुंजी

हर इंसान अपने लक्ष्य की प्राप्ति में प्रयासरत रहता है। उसके लिए जरूरी होता है 'आत्मविश्वास'। 'आत्मविश्वास' यानी अपनी आत्मा पर विश्वास या अपने आप पर विश्वास।

जीवन में हर काम अपने आत्मविश्वास के बलबूते पर ही होते हैं। आत्मविश्वास के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण का होना जरूरी होता है। बिना आत्मविश्वास के कोई भी काम सफल नहीं हो सकता है।

अगर होता भी है तो निम्नस्तर का या आधा-अधूरा व खराब। आइए, हम जानते हैं आत्मविश्वास के बारे में-

क्या है आत्मविश्वास?

आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। इससे महान कार्यों के संपादन में सहजता और सफलता हमें प्राप्त होती है। बगैर आत्मविश्वास के इन कार्यों की सफलता संदिग्ध ही बनी रहती है।

एकाग्रचित बनें

जिस भी व्यक्ति का मन शंका, चिंता और भय से भरा हो वह बड़े कार्य तो क्या, साधारण से साधारण कार्य भी नहीं कर सकता है। चिंता व शंका आपके मन को कभी भी एकाग्र न होने देंगे अतः आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु अपने मन से सभी प्रकार के संदेह निकालें तथा एकाग्रता को बढ़ाएं।

आत्मविश्वास अद्भुत शक्ति

आत्मविश्वास एक अद्भुत शक्ति होती है। इसके बल से व्यक्ति तमाम विपत्तियों तथा शत्रुओं का सामना कर लेता है। संसार के अभी तक के बड़े से बड़े कार्य आत्मविश्वास के बलबूते ही हुए हैं और हो रहे हैं तथा होते रहेंगे।

बच्चों में आत्मविश्वास भरें

माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों में आत्मविश्वास भरें। उनका आत्मविश्वास कभी कम नहीं करना चाहिए। उन्हें कभी भी इस प्रकार के नकारात्मक शब्द कि 'तुम कुछ नहीं जानते' या 'तुम में इस बात की कमी है' कभी नहीं कहने चाहिए।

इससे बच्चों का आत्मविश्वास कम होता है तथा इससे उनमें हीनभावना जागृत होती है तथा वे कुंठित हो जाते हैं। आज जग में जो निराशा की भावना तथा गरीबी दिखाई दे रही है उसके पीछे प्रमुख कारण यही हीनभावना है।

ऐसे बढ़ाएं आत्मविश्वास -

सकारात्मक चिंतन हो : सबसे पहले व्यक्ति को चाहिए कि वह हमेशा सकारात्मक चिंतन करे। सकारात्मक विचारधारा के लोगों के साथ ही रहें। कहा भी जाता है कि 'जैसी संगति, वैसी उन्नति'। जैसी आपकी विचारधारा होगी, दिमाग भी वही सोचने लगता है अतः सकारात्मक ही सोचें तथा साथ ही अपनी खामियों को भी स्वीकार करें।

आत्मविश्वास से भरपूर होने का अभ्यास करें -

आप अपना आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए यह प्रयास करें कि मैं सक्षम हूं। मैं यह कार्य कर सकता हूं। मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं आएगी।

महानायक अमिताभ बच्चन को भी पहली बार अभिनय करते वक्त काफी डर लगता था। जब अधिक डर लगता था तो वे स्वयं से कहते थे कि 'मैं जिसका रोल कर रहा हूं वह व्यक्ति मैं ही हूं' ऐसा सोचते व करते उनका आत्मविश्वास बढ़ गया व आज वे 'बिग बी' कहलाते हैं।

बीती ताहि बिसारि दे : अपने द्वारा भूतकाल में की गईं गलतियों, असफलताओं को आप भुलाकर नई शुरुआत करें। भविष्य की योजना बनाएं तथा लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति में जुट जाएं।

उपलब्धियां याद रखें : आत्मविश्वास की कुंजी है असफलता को स्वीकारना। श्रेष्ठ काम के लिए स्वयं को सराहें। आपके द्वारा सफलतापूर्वक किया गया काम आप फिर दोहरा सकते हैं इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

नया सीखते रहें : यदि आपको वर्तमान परिस्थिति जटिल लगे तो उसे नए तरीके से सीखने का प्रयास करना चाहिए। कुछ नया सीखने से आपका आत्मविश्वास तथा उत्साह बढ़ेगा तथा आपको इस बात का एहसास होता रहेगा कि 'मैं कुछ अलग व नया जानता हूं।' इससे आपका काम कम समय में बेहतर तरीके से होगा।

व्यक्तित्व को निखारिए : अपने व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देते रहें तथा हमेशा अपना व्यक्तित्व आकर्षक बनाए रखिए। बॉडी लैंग्वेज और कम्युनिकेशन स्किल को सुधारें। संकीर्ण मनोवृत्ति का न बनें। स्वयं को नई सूचनाओं से अपडेट रखें तथा आसपास के परिवेश से भी तालमेल बैठाए रखें।

इस प्रकार की चंद बातों को आजमाकर आप अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं तथा जीवन में नित नई उन्नति कर सकते हैं। तो आप भी आज से जुट जाइए अपना आत्मविश्वास बढ़ाने व तरक्की करने में।

टॉपर्स बनने के टिप्स

सफलता को पाने के लिए कड़ी मेहनत तो करनी ही पड़ती है। हम किसी कक्षा की एग्जाम या प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हों, इसके लिए सिर्फ एक ही लक्ष्य रखना पड़ता है वह है पढ़ाई।

किसी परीक्षा में टॉप करने वाले स्टूडेंट्स को देखकर मन में यही विचार आता है कि टॉपर्स किस तरह से परीक्षा की तैयारी करते हैं। **कुछ टिप्स जो टॉपर्स अपनाते हैं-**

- शुरुआत में ही यह सोच लें कि आपको किस क्षेत्र में करियर बनाना है, उस क्षेत्र में सफलता के लिए जुट जाएं।
- पूर्ण समर्पण के साथ पढ़ाई करें। अगर कोचिंग के अलावा घर पर भी पढ़ाई करें।
- स्वयं का आत्मविश्वास बनाएं रखें। स्वयं पर किसी प्रकार का दबाव न आने दें।
- अपनी कमजोरियों को खोजें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें।
- टॉपिक्स को रटने की बजाय समझकर पढ़ने की कोशिश करें।
- पढ़ाई में निरंतरता रखें। रेग्यूलर पढ़ाई करने से वह बोझ महसूस नहीं होती।
- किसी प्रतियोगी एग्जाम की तैयारी प्लानिंग से करें ताकि रिविजन में परेशानी न आए।
- अपने ऊपर किसी प्रकार का दबाव न आने दें।
- पढ़ाई के दौरान किसी भी प्रकार की परेशानी आने पर उसका टीचर्स से या दोस्तों के साथ मिलकर हल निकालने का प्रयास करें।
- जिस क्षेत्र में आप तैयारी कर रहे हैं, उस क्षेत्र के एक्सपर्ट्?स का मार्गदर्शन समय-समय पर लेते रहें।

ऐसे करें टाइम मैनेजमेंट

समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है। किसी के लिए रुकता नही है। जिस तरह मुट्ठी में बंधी हुई रेत को फिसलने से हाथ में ?नहीं रोका जा सकता है, उसी तरह समय के ?पहिए को भी नहीं रोका जा सकता है।

कॉम्पीटिशन के इस दौर में समय के साथ चलना जरूरी है। अक्सर लोग समय का रोना रोते रहते हैं। खासकर युवा व्यर्थ कामों में अपना समय लगाकर अपने महत्वपूर्ण काम की अनदेखी करते हैं। फिर उनकी शिकायत रहती है हमें समय ही नहीं मिलता। ऐसे में आवश्यकता होती है टाइम मैनेजमेंट की। आप अपना कार्य जितने व्यवस्थित तरीके से करेंगे, काम उतना बेहतर और जल्दी होगा।

जानिए टाइम मैनेजमेंट के कुछ टिप्स-

- सबसे पहले यह देखें कि आप कहां टाइम वेस्ट कर रहे हैं। जैसे चेटिंग, फेसबुक, ई-मेल या टीवी वगैरह। इन कामों का समय निर्धारित कर आप काफी टाइम बचा सकते हैं।
- प्राथमिकताएं तय कीजिए। जो काम जरूरी है उसे अभी ?कीजिए और जो बाद में किया जा सकता है, उसके लिए समय तय कीजिए। गैर जरूरी काम छोड़कर भी आप वर्कलोड कम कर सकते हैं।
- टाइम मैनेजमेंट टूल्स का उपयोग कीजिए। मोबाइल, कैलेंडर या चार्ट वगैरह की मदद से काम समय पर निपटाए जा सकते हैं। बस रिमांडर को अवॉइड करने की आदत छोड़नी होगी।
- काम आउटसोर्स कीजिए। आप चाहें स्टूडेंट हों, प्रोफेशनल हों या गृहिणी, ऐसे कई काम हैं जो दूसरों से करवाए जा सकते हैं। इससे आपका वर्कलोड कम होगा और आप बेहतर काम कर पाएंगे।
- इंतजार में वक्त बर्बाद न करें। कई मौकों पर हमें इंतजार करते हुए लंबा समय गुजारना पड़ता है। कुछ छोटे-मोटे काम इस समय निपटाए जा सकते हैं। जैसे मेल्स चेक करना, नोट्?स बनाना या जरूरी फोन लगाना।

इन आसान टिप्स को अपनाकर आप समय के सदउपयोग के साथ उसके साथ आगे बढ़ सकेंगे।

संकल्पों के साथ कैरियर की शुरुआत

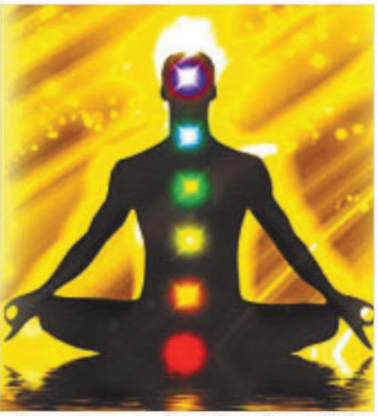

जो संकल्प लिया गया हो, उसके बारे में अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों को भी बताना जरूरी है। इससे फायदा यह होगा कि आप संकल्प पूर्ण करने में जरा भी कमजोर या निष्क्रिय दिखाई दिए तो आपके दोस्त व रिश्तेदार आपको आपके संकल्प की याद दिला देंगे।

कई लोगों को लगता है कि जिंदगी बहुत छोटी है, इसमें कई बड़े काम करने हैं। यह सही है कि जीवन बहुत छोटा है, लेकिन यह सोच कतई उचित नहीं है कि आप एकसाथ कई संकल्प कर लें या कामों की लाइन लगा दें। मतलब यही कि आप कई संकल्प एकसाथ न लें। ऐसा करना अपनी क्षमताओं को बहुत ज्यादा आंकने से भी हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि ठोक-बजाकर वही संकल्प लें, जिसे पूरा करना संभव हो।

अक्सर देखा जाता है कि देखा-देखी या किसी के कहने में आकर भी संकल्प ले लिए जाते हैं। ऐसे संकल्पों की कोई ठोस जमीन नहीं होती। नतीजतन संकल्प का कोई मतलब नहीं रह जाता। इससे बेहतर है कि अपनी रुचि, इच्छा तथा तैयारी हो तभी संकल्प लें। हरेक व्यक्ति की क्षमता, सोच, उत्साह, जोश, प्रवृत्ति, प्रकृति आदि अलग-अलग होते हैं। इसलिए अपने व्यक्तित्व को जाँचकर संकल्प लें।

जो संकल्प लिया गया हो उसके बारे में अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों को भी बताना जरूरी है। इससे फायदा यह होगा कि आप संकल्प पूर्ण करने में जरा भी कमजोर या निष्क्रिय दिखाई दिए तो आपके दोस्त व रिश्तेदार आपको आपके संकल्प की याद दिला देंगे।

बड़े काम तभी संभव हो पाते हैं, जब उन्हें पूरा करने में हम पूरी दृढ़ता के साथ पूरी शक्ति, उमंग, जोश तथा ऊर्जा के साथ लग जाते हैं। यदि हमारी मनःस्थिति ढुलमुल रही या हम 'हां-ना' के जाल में फंसे रहे तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते। काम छोटा हो या बड़ा, उसे पूरा करने के लिए सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

जीवन को अर्थवान बनाने के लिए कई लोग तरह-तरह के संकल्प लेते हैं। इससे उनके जीवन का लक्ष्य तय होता है। प्रसिद्ध विचारक स्वेट मॉर्डेन ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'ऐसा व्यक्ति कठिनाई से मिलता है, जो विश्वासपूर्वक यह कह सके कि मैं करूंगा। जो कार्य मुझे करना चाहिए मैं उसे करता हूं, जो कार्य मैं कर सकता हूं, वह मुझे करना चाहिए। भगवान की कृपा से मैं ऐसे कार्य अवश्य पूरे करूंगा। मैंने परम पिता परमेश्वर के सम्मुख प्रण लिया है कि मैं इसे अवश्य पूर्ण करूंगा।' व्यक्ति इस आधार पर अपना संकल्प तय कर ले तो उसमें जो आत्मविश्वास एवं दृढ़ता आएगी, उससे उसके संकल्प के पूरा होने में कोई संदेह नहीं रहेगा।

किसी भी संकल्प को लेने से पहले सबसे ज्यादा जरूरी है कि बिलकुल शांत तथा एकाग्र हो जाएं। फिर अपनी तमाम शक्तियों या क्षमताओं तथा कमजोरियों का पूरा आकलन करें। इसमें अपनी रुचि को सर्वोच्च स्थान दें।

ऐसा करने से आपको अपनी सीमाओं का पता चल जाएगा और आप अपनी हद में रहकर संकल्प ले सकेंगे। यदि ऐसा नहीं किया गया तो संकल्प अति उत्साह या आवेग में लिया हुआ होगा, जिसका ज्वार बहुत जल्दी उतर जाता है। ऐसे में व्यक्ति का संकल्प भी धरा-का-धरा रह जाता है। इसका असर इतना विपरीत होता है कि व्यक्ति निराश एवं हताश हो जाता है, जिससे उसके दूसरे कार्य भी बिगड़ जाते हैं। उसका संपूर्ण व्यक्तित्व नकारात्मक दिशा में जा सकता है।

नहीं मिल रही है नौकरी, तो करें...

अगर सभी योग्यता और डिग्री होने के बाद भी आपको नौकरी नहीं मिल रही है। भरपूर प्रयत्न करने के बाद भी आप जॉब मार्केट में कंपनियों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं। आप इंटरव्यू में सफल नहीं हो पा रहे हैं तो आपको सेल्फ एनालिसिस करना होगा।

इससे आप अपनी खूबियों को पहचान सकेंगे और उन्हें जॉब्स ढूंढने में उपयोग कर सकते हैं। कुछ खास बातें जो आपको नौकरी दिलाने में मददगार हो सकती हैं-

कम्युनिकेशन बढ़ाएं- सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्?स पर सक्रिय रहें। लोगों से मिलें। हर जॉब पोर्टल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाना चाहिए। नौकरी की अपनी जरूरतों को स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए। ई-मेल या फोन करने की बजाय लोगों से सीधे मिलें। इससे आपका प्रभाव लोगो पर अच्छा पड़ेगा।

विकल्पों पर रखें नजर- आप जिस क्षेत्र में नौकरी करना चाहते हैं, उससे जुड़ी कंपनियों के वर्क कल्चर और हायरिंग प्रोसेस के बारे में जानकारी जुटाएं। कुछ ऐसी कंपनियों पर भी गौर कर सकते हैं, जो अलग-अलग तरह के काम करवाती हैं।

अपनी खूबियों को पहचानें- नौकरी ढूंढने से पहले आपको अपनी खूबियों की बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। इस बात की भी जानकारी रखें कि आज जॉब्स देने वाली कंपनियों की जरूरतें क्या हैं। आजकल एक नौकरी के लिए हजारों आवेदन आते हैं, ऐसे में आपमें कुछ खास योग्यताएं होनी चाहिए , ताकि आप वह जॉब हासिल कर सकें।

आकर्षक हो रिज्यूमे- आपका रिज्यूमे आकर्षक होना चाहिए। रिज्यूमे में ओवरलोड कंटेंट नहीं होगा चाहिए। अपनी खूबियां संक्षेप में होनी चाहिए। आपका प्रोफाइल खास होना चाहिए। अपनी पसंद और नापसंद और काम करने के तरीके के बारे खास तरीके से प्रस्तुति दें।

इंटरव्यू के लिए खास बातें

कहते हैं फर्स्ट इंम्प्रेशन इज़ लास्ट इम्प्रेशन। किसी जॉब के लिए इंटरव्यू देते समय आपको इन्हीं बातों का ध्यान रखना पड़ता है। आप इंटरव्यू में अपने आपको सही तरीके से प्रस्तुत करेंगे तो आपको जॉब मिलने में आसानी होगी। आइए जानते हैं कुछ इंटरव्यू टिप्स, जिन्हें अपनाकर आप इंटरव्यू में सफल हो सकते हैं।

समय से पहले न पहुचें- समय से पहले पहुंचने पर इंटरव्यूअर पर आपके प्रति नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। समय का पाबंद रहना अच्छा गुण है। इस बात का ध्यान रखें कि आप न देर से पहुचें और न समय से पहले पहुंच कर वहां खाली बैठे रहें। कुछ हायरिंग मैनेजरों को कैंडिडेट्स का बिना वजह खाली बैठे रहना पसंद नहीं आता।

हरेक गतिविधि पर नजर- इंटरव्यू देते वक्त आपका ध्यान सिर्फ उसी पर रहता है। इंटरव्यूअर आपसे सवाल-जवाब करने के दौरान आपकी प्रत्येक हलचल पर ध्यान रखता है।कई कंपनियों में तो कैंडिडेट्?स के व्यवहार को देखने के लिए रिसेप्शन पर कैमरे तक लगाए जाते हैं। हायरिंग मैनेजर इन कैमरों से यह देखते हैं कि आप रिसेप्शनिस्ट और दूसरे इंटरव्यू देने आए प्रतिभागियों से कैसा व्यवहार कर रहे हैं।

बातों को बढ़ा-चढ़ाकर न बोलें- इंटरव्यू के दौरान अनावश्यक न बोलें। आपसे जो सवाल किया जाए, उसी का सीधे तरीके से जवाब दें। कई लोगों की आदत जरूरत से ज्यादा बोलने की होती है। इंटरव्यूवर को इस बात से सख्त नफरत होती है कि आप उसके सवाल का जवाब देने की बजाय इधर-उधर की बातें करें। अगर आप फालतू की बात करेंगे तो यही माना जाएगा कि आपको कुछ पता नहीं है।

सकारात्मक जवाब- इंटरव्यू के दौरान अपने पॉजीटिव एटिट्यूट को प्रदर्शित करें। इंटरव्यू के दौरान आपसे चाहे जितने नकारात्मक प्रश्न पूछे जाएं, आप उनका जवाब पॉजीटिव ही दें। इंटरव्यू के दौरान ज्यादा कम्फर्टेबल और फ्रेंडली होने का प्रयास भी न करें।

अपने इम्प्लोयर की न करें आलोचना- आप अपने वर्तमान जॉब से चाहे कितने ही असंतुष्ट क्यों न हों, लेकिन इंटरव्यू के दौरान अपने इम्प्लोयर की किसी भी तरह की आलोचना न करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो इंटरव्यू पैनल में आपके बारे में गलत संदेश जाएगा।

राजकुमार राव की अगली फिल्म का हुआ ऐलान

राजकुमार राव आखिरी बार फिल्म 'मालिक' में खूंखार लुक में नजर आए थे। अब उनकी आने वाली फिल्म अनाउंसमेंट हो गई है। एक्टर और मेकर्स ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इसकी जानकारी शेयर की।

कीर्ति सुरेश होंगी फीमेल लीड

राजकुमार राव अगली फिल्म 'रफ्तार' में नजर आएंगे। उनके साथ साउथ की जानी-मानी एक्ट्रेस कीर्ति सुरेश लीड रोल में होंगी। इस फिल्म का निर्देशन आदित्य निंबालकर कर रहे हैं, जबकि इसे राजकुमार राव की पत्नी पत्रलेखा अपने बैनर कम्पा फिल्म के तहत प्रोड्यूस कर रही हैं।

फिल्म की कहानी

फिल्म की कहानी तेजी से बढ़ती स्टार्टअप की दुनिया के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें एक ऐसे लड़के और लड़की की कहानी दिखाई जाएगी जो सफलता पाने के लिए बहुत महत्वाकांक्षी हैं। जैसे-जैसे पैसा, ताकत और लालच बढ़ता है, वैसे-वैसे उनके रिश्ते की भी परीक्षा होने लगती है। बताया जा रहा है कि फिल्म भारत के कॉमर्शियल एजुकेशन सिस्टम पर एक सटायर भी है, जिसमें दिखाया जाएगा कि कैसे कई बार ज्ञान से ज्यादा मुनाफे को अहमियत दी जाती है। कहानी यह सवाल भी उठाती है कि सफलता पाने की कीमत क्या होती है और क्या वह कीमत सच में सही है।

जैसे ही पोस्ट शेयर की गई, उसके बाद से ही फैंस में एक्साइटमेंट बढ़ गई है। फिल्म के नाम को देखकर लोग कयास लगा रहे हैं कि ये रैपर रफ्तार की बायोपिक है, और लोग बड़े उत्साह से कमेंट में रैपर रफ्तार की तारीफें कर रहे हैं। हालांकि अभी ऐसी कोई रिपोर्ट सामने नहीं आई है, जिसमें ऐसा जिक्र किया गया हो कि ये मूवी रैपर रफ्तार की जिंदगी पर आधारित होगी।

कब रिलीज होगी मूवी?

इस फिल्म में राजकुमार राव और कीर्ति सुरेश के अलावा तान्या मानिकतला, रजत कपूर, अनुराग ठाकुर और रोहन वर्मा भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। यह फिल्म 24 जुलाई 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

निकिता दत्ता ने जुबीन नौटियाल से शादी की खबरों पर की बात

मुझे अफवाहें फैलाना पसंद नहीं

कई सेलेब्रिटीज के बाद अब अभिनेत्री निकिता दत्ता ने भी इंडस्ट्री में होने वाले पीआर गेम पर बात की। साथ ही उन्होंने सुर्खियां बटोरने के लिए फैलाई जाने वाली अफवाहों की खुलकर आलोचना की। इस दौरान एक्ट्रेस ने सिंगर जुबीन नौटियाल के साथ अपने रिलेशनशिप और शादी की खबरों पर भी प्रतिक्रिया दी। अभिनेत्री का कहना है कि वह अनजाने में भी अफवाहों का हिस्सा नहीं बनना चाहतीं।

देर से आई पीआर के बारे में समझ

बातचीत के दौरान निकिता ने जुबीन नौटियाल के साथ अपनी शादी की अफवाहों पर कहा कि पीआर के बारे में मेरी समझ की बात करें, तो बेशक यह बहुत देर से आई। यह एक ऐसी बात है, जिसका मुझे अफसोस है और काश कबीर सिंह के रिलीज होने के समय मुझे इस बात की थोड़ी बेहतर जानकारी होती कि चीजें कैसे काम करती हैं। दूसरी बात अगर आप इन सभी वर्षों में मेरे करियर को देखें, तो मैंने व्यक्तिगत और निजी जीवन के बीच एक सीमा बनाए रखी है। इस सीमा को मैंने कभी पार नहीं किया है। आपने मेरे बारे में कभी भी मनगढ़ंत अफवाहें नहीं सुनी होंगी। मैं वैसी इंसान नहीं हूं। मैं न तो ऐसी अफवाहें फैलाना पसंद करती हूं और न ही उनका हिस्सा बनना, चाहे अनजाने में ही क्यों न हो। मैं ऐसी चीजों का समर्थन नहीं करती। मार्केटिंग स्ट्रेटजी के बारे में एक्ट्रेस ने कहा कि यह प्रोडक्शन हाउस का निर्णय होता है।

ऐसे शुरू हुई जुबीन और निकिता के रिलेशनशिप की खबरें

बीते दिनों निकिता को जुबीन नौटियाल के साथ सिंगर के होम टाउन में देखा गया था। इसके बाद ही दोनों के रिलेशनशिप में होने की चर्चाएं सामने आई थीं। इसके अलावा मुंबई के कैफे में भी दोनों को साथ देखा गया और अभिनेत्री को 2022 में एयरपोर्ट पर उन्हें लेने जाते हुए भी देखा गया था। इसके बाद ऐसी चर्चाएं तेज हो गईं कि दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं और जल्द ही शादी भी कर सकते हैं। हालांकि, अब निकिता ने साफ तौर पर तो शादी के सवाल पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन उन्होंने अफवाहों और पीआर गेम की बात करते हुए इशारों में इसे गप्प बता दिया।

ऐसा रहा निकिता का करियर

वर्कफ्रंट की बात करें तो निकिता ने 2014 में बॉलीवुड फिल्म 'लेकर हम दीवाना दिल' से अभिनय की शुरुआत की। फिल्मों के अलावा, उन्होंने 'ड्रीम गर्ल - एक लड़की दीवानी सी' से टेलीविजन की दुनिया में कदम रखा। वह 'खाकी : द बिहार चैप्टर' और 'द वेकिंग ऑफ अ नेशन' जैसे कुछ ओटीटी प्रोजेक्ट्स में भी नजर आ चुकी हैं। निकिता आखिरी बार पिछले साल आई नेटफ्लिक्स की फिल्म 'ज्वेल थीफ' में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ सैफ अली खान और जयदीप अहलावत भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आए थे।

सलमान खान की फिल्म का बदला नाम, अब 'मातृभूमिः मे वॉर रेस्ट इन पीस' के नाम से होगी रिलीज

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान पिछले कुछ समय से अपनी आने वाली फिल्म 'बैटल ऑफ गलवान' को लेकर लगातार चर्चा में हैं। इस फिल्म की कहानी भारत और चीन के बीच हुए गलवान घाटी के घटनाक्रम से प्रेरित बताई जा रही है। लेकिन अब इस फिल्म को लेकर एक नया और बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल, फिल्म के मेकर्स ने रिलीज से पहले इसका नाम बदल दिया है, जिससे फैंस के बीच फिर से चर्चा तेज हो गई है। दरअसल, सोमवार को सलमान खान की प्रोडक्शन कंपनी सलमान खान फिल्म्स ने आधिकारिक तौर पर इस फिल्म के नए नाम की घोषणा की। अब यह फिल्म 'मातृभूमि : मे वॉर रेस्ट इन पीस' के नाम से रिलीज होगी। पहले इस प्रोजेक्ट को 'बैटल ऑफ गलवां' के नाम से जाना जा रहा था। नाम बदलने के साथ ही मेकर्स ने फिल्म का एक नया पोस्टर भी जारी किया, जिसने सोशल मीडिया पर आते ही लोगों का ध्यान खींच लिया। इस पोस्टर में सलमान खान बेहद अलग और गंभीर नजर आ रहे हैं। उनके चेहरे पर खून और जख्म साफ दिखाई दे रहे हैं। उनके माथे पर गहरी चोट है और चेहरा धूल-मिट्टी से भरा हुआ है। उनकी आंखों में गुस्सा और दर्द का मिला-जुला भाव है। पोस्टर में सबसे ध्यान खींचने वाला हिस्सा एक ऐसा हथियार है जिसे वह अपने हाथ से रोकते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस हथियार के ऊपर कांटेदार तार लिपटा हुआ है और उस पर खून के निशान भी दिखाई देते हैं। वहीं, बैकग्राउंड को धुएं और धूल से भरा हुआ दिखाया गया है; इसमें कुछ सैनिक हथियार के साथ दौड़ते नजर आ रहे हैं। इस पोस्टर का माहौल युद्ध जैसा महसूस होता है। सलमान खान ने इस पोस्ट के कैप्शन में लिखा, 'मातृभूमि : मे वॉर रेस्ट इन पीस', यानी युद्ध का अंत हो और शांति कायम रहे। फिल्म में सलमान खान कर्नल संतोष बाबू की भूमिका निभाते नजर आएंगे, जो 16 बिहार रेजिमेंट का नेतृत्व करते हुए लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल पर स्थिति संभालते हैं। वहीं उनके साथ अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। इसके अलावा, अभिनेता अभिलाष चौधरी और अंकुर भाटिया भी फिल्म में अहम किरदार निभाते दिखाई देंगे।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने बॉलीवुड में 'फेक मूवीज' पर कसा तंज

एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी, जिन्हें आखिरी बार नेटफ्लिक्स की क्राइम थ्रिलर 'रात अकेली है : बंसल मर्डर्स' में देखा गया था, उन्होंने एक इवेंट में बॉलीवुड पर 'फेक फिल्में' बनाने का दावा किया है। उन्होंने कहा कि सच्चाई जानते हुए, उसके बारे में कोई बोलता नहीं है। लेकिन उस पर फिल्में बनाई जा रही हैं। इस पर लोगों को लग रहा है कि एक्टर ने 'धुरंधर' और 'द केरल स्टोरी' जैसी फिल्मों को निशाना बनाया है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने एक इवेंट में हिस्सा लिया और वहां पर उनसे ईरान-इजराइल युद्ध के बारे में पूछा गया कि मौजूदा हालात को देखते हुए और जिस तरह से फिल्में ऐसे विषयों को स्क्रीन पर ला रही हैं, तो क्या फिल्ममेकर्स के पास भी समाज को गाइड करने की जिम्मेदारी होती है तो एक्टर ने जवाब दिया, 'समाज को गलत दिखा में ले जाने की जरूरत नहीं है। सच्चाई बहुत इम्पॉर्टेंट है और सच्चाई हर इंसान आज की डेट में जानता है। जिस तरह की फिल्में बन रही हैं, उनके पीछे की सच्चाई क्या है, आप जानते हैं लेकिन आप बोलेंगे नहीं।'

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने बॉलीवुड पर लगाया आरोप

जब उनसे नैरेटिव-बेस्ड फिल्मों के बारे में पूछा गया तो वह बोले, 'झूठी फिल्में बन रही हैं हमारे यहां। फेक फिल्में बन रही हैं। ये सब जानते हैं। दुनिया में क्या हो रहा है। सब जानते हैं। असली सच्चाई क्या है। ये भी सब जानते हैं।' जब एक्टर से पूछा गया कि क्या वह मौजूदा युद्ध के बारे में अपडेट्स पढ़ रहे हैं तो उन्होंने कहा कि हर कोई इस बारे में जानकारी हासिल कर रहा है। वह बोले, 'क्या झूठ फैलाया जा रहा है और क्या नैरेटिव सेट किया जा रहा है, सब इसके बारे में जानते हैं।'

26 साल बाद दिखेगी शिल्पा शेट्टी और जैकी की जोड़ी

बॉलीवुड के दो लोकप्रिय सितारे शिल्पा शेट्टी और जैकी श्रॉफ एक बार फिर साथ काम करने जा रहे हैं। करीब 26 साल बाद दोनों की जोड़ी परदे पर वापसी कर रही है। यह नई शुरुआत प्राइम वीडियो की एक वेब सीरीज के जरिए होगी। सूत्रों के अनुसार... यह 8 एपिसोड की 'स्लाइस-ऑफ-लाइफ' ड्रामा सीरीज होगी। कहानी शहरी रिश्तों और जिंदगी में मिलने वाले दूसरे मौकों पर आधारित होगी। निर्माता इस शो को भावनात्मक और असल जिंदगी के करीब बनाने की तैयारी में हैं, ताकि दर्शक इससे खुद को जोड़ सकें। सीरीज की स्क्रिप्ट फाइनल हो चुकी है। फिलहाल प्रोडक्शन टीम मुंबई और पुणे में शूटिंग के लिए लोकेशन तलाश रही है। अगर सब कुछ तय योजना के अनुसार रहा तो मार्च से शूटिंग शुरू हो जाएगी। बताया जा रहा है कि शूटिंग का शेड्यूल करीब 60 दिनों का होगा।'

मैं एक्टर्स से फिल्म के लिए भीख नहीं मांगता

कार्तिक आर्यन ने ठुकराई थी 'हंगामा-2'

वेटरन फिल्ममेकर प्रियदर्शन ने अभिनेता कार्तिक आर्यन के साथ काम करने को लेकर खुलकर बात की है। उन्होंने बताया कि एक समय उन्होंने अपनी फिल्म हंगामा-2 के लिए कार्तिक आर्यन को अप्रोच किया था, लेकिन एक्टर ने फिल्म करने से मना कर दिया था। इस पर प्रियदर्शन ने कहा कि उन्हें किसी भी अभिनेता से काम के लिए भीख मांगना पसंद नहीं है। इंटरव्यू में प्रियदर्शन ने कहा कि कई बार अभिनेता सीधे मना नहीं करते, बल्कि सम्मानपूर्वक बात करके प्रोजेक्ट से दूरी बना लेते हैं। उनके मुताबिक, अगर किसी कलाकार को निर्देशक या स्क्रिप्ट पर भरोसा नहीं है तो वह जबरदस्ती उसे मनाने में विश्वास नहीं रखते। उन्होंने साफ कहा, 'मैं किसी भी अभिनेता से फिल्म करने के लिए भीख नहीं मांगता। जो मेरे काम पर भरोसा करता है, मैं उसी के साथ काम करता हूं।

कार्तिक समेत इन स्टार्स ने ठुकराई थी फिल्म

प्रियदर्शन ने खुलासा किया कि हंगामा-2 का कॉन्सेप्ट सिर्फ कार्तिक आर्यन को ही नहीं, बल्कि आयुष्मान खुराना और सिद्धार्थ मल्होत्रा को भी सुनाया गया था। हालांकि तीनों कलाकारों ने यह फिल्म करने से मना कर दिया। इसके बाद प्रियदर्शन ने फिल्म में मिजान जाफरी को लीड रोल में लेकर प्रोजेक्ट पूरा किया। दैशक का मानना है कि कई बार कलाकार स्क्रिप्ट या निर्देशक पर भरोसा नहीं कर पाते, इसलिए प्रोजेक्ट से दूर हो जाते हैं। लेकिन वह इस बात को व्यक्तिगत रूप से नहीं लेते और नए कलाकारों के साथ काम करने को तैयार रहते हैं।

स्क्रिप्ट के बाद तय करते हैं कास्ट

प्रियदर्शन ने कहा कि वह कभी भी किसी खास अभिनेता को ध्यान में रखकर फिल्म नहीं लिखते। पहले पूरी कहानी और किरदार तैयार करते हैं, उसके बाद तय करते हैं कि कौन-सा कलाकार उस रोल के लिए सबसे फिट रहेगा। उनके मुताबिक, अगर कोई स्टार फिल्म करने से मना कर देता है तो यह इंडस्ट्री का सामान्य हिस्सा है। निर्देशक के तौर पर उनका काम अच्छी कहानी बनाना है, न कि कलाकारों के पीछे भागना।

जल्द रिलीज होगी 'भूत बंगला'

वर्कफ्रंट की बात करें तो प्रियदर्शन इन दिनों अपनी नई हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'भूत बंगला' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में अक्षय कुमार लीड रोल में नजर आएंगे और यह फिल्म 10 अप्रैल 2026 में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। करीब 14 साल बाद अक्षय कुमार और प्रियदर्शन की जोड़ी एक साथ लौट रही है। फिल्म में कॉमेडी के साथ हॉरर का तड़का देखने को मिलेगा और दर्शकों को इससे काफी उम्मीदें हैं। प्रियदर्शन हिंदी सिनेमा के सबसे सफल कॉमेडी डायरेक्टर्स में गिने जाते हैं। उन्होंने हेरा फेरी, हंगामा, चुप चुप के और भूल भुलैया जैसी कई लोकप्रिय फिल्में बनाई हैं।

विधायक की पहल पर जामुल–कुरूद में प्रस्तावित बायोफ्यूल प्लांट के स्थल परिवर्तन पर लगी मोहर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुलाकात कर उन्हें जनभावनाओं से कराया अवगत

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

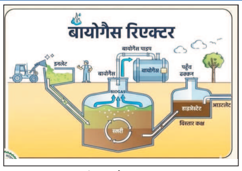

भिलाई के जामुल–कुरूद क्षेत्र में प्रस्तावित बायोफ्यूल और कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट को लेकर चल रहे विवाद पर स्थानीय विधायक रिकेश सेन की बड़ी पहल रंग लाई है। सदन में इस विषय पर हुई चर्चा के उपरांत विधायक रिकेश सेन ने स्वयं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुलाकात कर उन्हें जनभावनाओं से अवगत कराया, जिसके बाद मुख्यमंत्री ने उक्त प्लांट को आबादी वाले क्षेत्र से हटा कर किसी निर्जन स्थान पर स्थानांतरित करने पर अपनी सहमति दे दी है।

गौरतलब है कि नगर निगम भिलाई द्वारा जामुल और कुरूद में लगभग 60 करोड़ रुपये की लागत से 130 टन प्रतिदिन क्षमता वाला नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण प्लांट प्रस्तावित था। इसके लिए 11 दिसंबर 2025 को लीज डीड भी निष्पादित कर दी गई थी। हालांकि, स्थानीय रहवासियों में इस बात को लेकर भारी चिंता थी कि आबादी के इतने पास प्लांट होने से भविष्य में प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

विधायक रिकेश सेन ने इस मामले को सदन में प्रमुखता से उठाया। यद्यपि शासकीय उत्तर में पूर्व में स्थल परिवर्तन का कोई विचार नहीं होने की बात कही गई थी किंतु विधायक रिकेश सेन ने हार नहीं मानी। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को विस्तार से समझाया कि जनहित में इस प्लांट का आबादी से दूर होना क्यों आवश्यक है।

मुख्यमंत्री द्वारा स्थल परिवर्तन की सहमति मिलने पर विधायक रिकेश सेन ने उनका हृदय से आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि भिलाई की जनता का हित मेरे लिए सर्वोपरि है। स्थानीय रहवासियों की मंशा के अनुरूप इस प्लांट को अब आबादी से दूर किसी उपयुक्त निर्जन स्थान पर स्थानांतरित किया जाएगा। मुख्यमंत्री सायजी का आभारी हूँ कि उन्होंने संवेदनशीलता दिखाते हुए इस ऐतिहासिक निर्णय पर अपनी मुहर लगाई। यह लोकतंत्र और जनता की आवाज की जीत है।

इस निर्णय की जानकारी मिलते ही जामुल और कुरूद क्षेत्र के नागरिकों में हर्ष की लहर दौड़ गई है। विधायक रिकेश सेन की इस त्वरित और प्रभावी पहल को क्षेत्र की जनता ने 'स्वागतेय' और 'ऐतिहासिक' बताया है।

खास खबर

शासकीय आश्रमों में बच्चियां सुरक्षित नहीं – दीपक बैज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि बीजापुर जिले के एक शासकीय छात्रावास मे एक बार फिर मानवता शमर्सार हुई है। पालकों का भरोसा टुटा है। शासकीय छात्रावास मे तीन मासूम बच्चियों के साथ दुराचार हुआ है। बच्चिया गर्भवती हो गयी है। आश्रम प्रबंधन ने मामले को छुपाने के लिए इन पीड़ित बालिकाओं को आश्रम से निकाल कर घर भेज दिया। जबकि ऐसी घटना की जानकारी मिलने के बाद पॉक्सो एक्ट की धारा 19 के तहत आश्रम प्रबंधन को सबसे पहले पुलिस को सूचना देना था।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि राज्य मे जब से भाजपा की सरकार बनी है, सरकारी आश्रम मे बच्चियां सुरक्षित नहीं हैं। इसके पहले भी बीजापुर के पोटा केबिन मे भी ऐसी ही घटना की जानकारी सामने आई थी 12 वी की छात्रा अनाचार के कारण गर्भवती हो गयी थी। सुकमा में भी ऐसी ही घटना हुई।कोरबा में भी ऐसी ही घटना हुई। रमन राज के समय हुई कांकेर के झलियामारी के जैसे ही बीजापुर की यह घटना है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रदेश का मुखिया आदिवासी है। उसके बावजूद वह आदिवासी बच्चियों को सुरक्षा नहीं दे पा रहा। इस घटना की जांच के लिए कांग्रेस जांच दल भेज रही है। इस मामले मे जो भी दोषी हो उनपर कड़ी कार्यवाही की जाय. प्रदेश के सभी छात्रावासों की सुरक्षा की समीक्षा की जानी चाहिए और हर छात्रावास की महिला पुलिस नियमित निगरानी करे।

कांग्रेस ने बीजापुर मामले की जांच के लिये 9 महिला नेत्रियों की कमेटी बनाया है। कमेटी की संयोजक सुकमा जिला पंचायत अध्यक्ष मंगमा, सदस्यगण पीसीसी महामंत्री नीना रावतिया, जिला पंचायत सदस्य सुलोचना कर्मा, जिला पंचायत सदस्य बबीता मांडवी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य पावर्ती कश्यप, पूर्व जिला पंचायत सदस्य अनिता तेलम, नगर पंचायत अध्यक्ष भोपालपट्नम रिंकी कोरम, गंगालूर सरपंच पायल हेमला है।

अवैध उत्खनन के खिलाफ प्रशासन का सख्त रुख

राजनांदगांव। कलेक्टर जितेन्द्र यादव के निर्देश पर जिले में खनिजों के अवैध उत्खनन और परिवहन के खिलाफ प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए कारर्वाई तेज कर दी है। खनिज विभाग की टीम द्वारा लगातार निगरानी रखते हुए दोषियों पर कार्रवाई की जा रही है।

इसी कड़ी में बुधवार को डोंगरगढ़ तहसील अंतर्गत ग्राम पेटेश्री, आलाबीरा, जामरी, मुड़पार, पारागांवकला, पारागांवखुर्द, मुरमुंदा और माटेकटा सहित अन्य क्षेत्रों में आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान रेत के अवैध परिवहन में लिप्त तीन ट्रैक्टर–ट्रॉलियों पर कारर्वाई की गई। खनिज अमले ने ग्राम पेटेश्री निवासी हेमंत सिन्हा, कोमल सिन्हा और रामबिलास साहू के स्वामित्व वाले ट्रैक्टर–ट्रॉलियों को जब्त किया। ये वाहन बिना वैध अनुमति रेत का परिवहन कर रहे थे। कार्रवाई के बाद सभी वाहनों को थाना तुमड़ीबोड़ के सुपुर्द किया गया है।

मां बमलेश्वरी धाम में उमड़ा आस्था का सैलाब चैत्र नवरात्रि आज से जलेगी आस्था की ज्योति

हाईटेक सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता सुविधा के साथ सजी धर्म नगरी डोंगरगढ़

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

चैत्र नवरात्रि के पावन पर्व की शुरुआत के साथ ही मां बमलेश्वरी धाम में आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। गुरुवार से प्रारंभ हो रहे नवरात्र पर्व को लेकर श्रद्धालुओं की भीड़ आज से ही उमड़ने लगी है। दूर–दराज से हजारों भक्त मां के दरबार में पहुंचकर पूजा–अचर्ना कर रहे हैं।

इस बार नवरात्र को लेकर प्रशासन और मंदिर ट्रस्ट ने व्यापक तैयारियां की हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और सुगम दर्शन के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, जिससे यह पर्व आस्था के साथ–साथ सुव्यवस्था का भी उदाहरण बने। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए करीब 1200 पुलिस जवानों की तैनाती की गई है। पूरे क्षेत्र को अलग–अलग जोन में बांटकर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया गया है। ड्रोन कैमरों के जरिए हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है, जिससे किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है।

चढ़ने–उतरने के अलग मार्ग, सुगम दर्शन की व्यवस्था

ऊंची पहाड़ी पर विराजमान मां बमलेश्वरी के दर्शन के लिए हर वर्ष लाखों श्रद्धालु कठिन चढ़ाई तय करते हैं। इस बार भीड़ को नियंत्रित करने के लिए चढ़ने और उतरने के मार्ग अलग–अलग बनाए गए हैं, ताकि दर्शन में किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो और श्रद्धालु आसानी से मां के दर्शन कर सकें।

प्लास्टिक मुक्त धाम, पर्यावरण संरक्षण पर जोर

इस बार मंदिर परिसर को पूरी तरह प्लास्टिक मुक्त रखने का निर्णय लिया गया है। प्रसाद वितरण में पॉलिथीन के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया है, जिससे स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सके।

भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए 11 स्थानों पर ठंडे पानी की व्यवस्था की गई है। पूरे मार्ग पर पर्याप्त लाइटिंग की सुविधा भी की गई है, ताकि दिन और रात दोनों समय श्रद्धालु सुरक्षित और सुगमता से दर्शन कर सकें। नवरात्र के नौ दिनों तक डोंगरगढ़ पूरी तरह भक्ति में डूबा रहेगा। मां बमलेश्वरी के जयकारों से गूंजता यह धाम श्रद्धालुओं के विश्वास, उत्साह और समर्पण का केंद्र बन चुका है। बल्कि आस्था, व्यवस्था और श्रद्धा का भव्य उत्सव बनकर सामने आ रही है।

सेक्टर 9 चौक पर हिन्दू नववर्ष पर होगा विशाल ध्वजारोहण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

हिन्दू नववर्ष पर होगा विशाल ध्वजारोहण सेक्टर 09 चौक पर, भव्य महाआरती के साथ सामूहिक श्री हनुमान चालीसा का भी होगा आयोजन

विक्रम संवत हिंदू नववर्ष 2083 के पावन अवसर पर श्रीराम जन्मोत्सव समिति भिलाई द्वारा 19 मार्च को शाम 4 बजे सेक्टर–9 चौक में विशाल ध्वजारोहण, सामूहिक हनुमान चालीसा, भव्य महाआरती और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन को लेकर समिति ने तैयारियाँ पूरी कर ली हैं और नगरवासियों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

समिति के युवा विंग अध्यक्ष मनीष पाण्डेय ने बताया कि हिंदू नववर्ष का यह पर्व सनातन संस्कृति और परंपराओं को जीवंत करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि ध्वजारोहण, सामूहिक हनुमान चालीसा और महाआरती के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं और धर्मप्रेमी बंधुओं को एकजुट कर उत्साह, ऊर्जा और आस्था के साथ नववर्ष का स्वागत किया जाएगा। समिति का उद्देश्य है कि इस आयोजन के माध्यम से समाज में एकता और धार्मिक आस्था का संदेश दिया जाए।

श्री पाण्डेय ने कहा कि हिंदू नववर्ष केवल कैलेंडर का बदलाव नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिकता का उत्सव है। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे इस आयोजन में शामिल होकर अपनी ऊर्जा और उत्साह से वातावरण को और अधिक भव्य बनाएँ।

मृतकों के परिजनों को मिली सहायता

दुर्ग। कलेक्टर अभिजीत सिंह ने दुर्घटना में मृतकों के परिजनों को 12 लाख रूपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम सांकरा, तहसील पाटन जिला दुर्ग निवासी राकेश यादव की विगत 20 सितम्बर 2025 को गहरे पानी में डूबने से मृत्यु हुई थी। इसी प्रकार ग्राम देउरझाल पतोरा, तहसील पाटन जिला दुर्ग निवासी तुषार कुमार उर्फ तुरू कोसरे की मृत्यु विगत 17 अगस्त 2025 को नहाते वक्त बांध के गहरे पानी में डूबने से और ग्राम घोघारी तहसील पाटन जिला दुर्ग की रहने वाली बालिका खनक बंजारे की मृत्यु विगत 16 जून 2025 को तालाब के पानी में डुबने से हुई थी। कलेक्टर द्वारा शासन के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन के प्रावधानों के अनुरूप स्व. राकेश यादव की पत्नि श्रीमती गोदा बाई यादव, स्व. तुषार कुमार उर्फ तुरू कोसरे के पिता श्री धनेश्वर और स्व. खनक बंजारे के पिता गुलशन बंजारे को क्रमशः 4–4 लाख रूपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की गई है।

संस्कृति व परंपरा के संरक्षण के लिए वरिष्ठ नागरिक अपने अनुभव ज्ञान को युवा पीढ़ी से करेंगे साझा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सूर्या विहार कालोनी में आयोजित वरिष्ठ नागरिकों की एक महत्वपूर्ण बैठक में समाज हित से जुड़े विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चा की गई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि संस्कृति एवं परंपरा के संरक्षण के लिए वरिष्ठ नागरिक अपने जीवन के अनुभव, ज्ञान एवं संस्कारों को युवा पीढ़ी के साथ साझा करेंगे, जिससे वे बेहतर नागरिक बनें और समाज एवं देश को सकारात्मक रूप से उन्नति के मार्ग पर ले जाएं। बैठक की अध्यक्षता भिलाई वरिष्ठ नागरिक महासंघ के अध्यक्ष घनश्याम कुमार देवांगन ने की।

बैठक में उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य धरोहर हैं, उनके अनुभव का लाभ उठाकर युवा आगे बढ़ें। उनके अनुभवों से युवा पीढ़ी को जीवन में सही मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। वर्तमान समय में तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में युवाओं को सही दिशा देने के लिए वरिष्ठों का मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक है। बैठक में भावी युवा पीढ़ी को नशे की लत से बचाने, बच्चों में अच्छे संस्कार डालने, महिला सशक्तिकरण हेतु प्रयास करने पर बल दिया गया। बैठक में वरिष्ठ नागरिकों के हितों पर भी चर्चा की गई।

इस पहल के तहत समय–समय पर संवाद कार्यक्रम, संगोष्ठी एवं मार्गदर्शन सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें वरिष्ठ नागरिक अपने अनुभवों को साझा करेंगे और युवाओं को नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारियों एवं जीवन के व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराएंगे।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने इसका स्वागत करते हुए इसे समाज के लिए एक सकारात्मक कदम बताया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रयास से पीढ़ियों के बीच संवाद मजबूत होगा और समाज में समरसता एवं जागरूकता का वातावरण विकसित होगा। बैठक में प्रमुख रूप से नरेंद्र कुमार मजूमदार, संजय कुमार मैराल, गंगा सिंह भदौरिया, लखनलाल वर्मा, सुरेशचंद्र श्रीवास्तव, धानेश्वर कुमार निर्मलकर आदि उपस्थित थे।

सेवा नहीं, संकल्प : जब जिम्मेदारी बन जाए पहचान

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

कोहका स्थित सर्व समाज कल्याण समिति का कार्यालय एक बार फिर समाजसेवा और संवेदनशीलता का केंद्र बनकर सामने आया, जहां क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, वरिष्ठजनों, माताओं–बहनों और युवाओं के साथ आत्मीय संवाद का आयोजन हुआ। इस संवाद में लोगों ने खुलकर अपनी समस्याएं और सुझाव साझा किए, जिन पर गंभीरता से चर्चा करते हुए हर संभव समाधान का भरोसा दिलाया गया।

लेकिन इस पूरे आयोजन की असली तस्वीर तब उभरकर सामने आई, जब जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की शिक्षा को बचाने के लिए ठोस कदम उठाए गए। यूथ सिख सेवा समिति, भिलाई के माध्यम से प्राप्त आवेदनों की जमीन पर जाकर जांच की गई और पाया गया कि कई परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं।

एक मामले में, सुपेला क्षेत्र के एक परिवार की हालत इतनी कमजोर थी कि 19,640 की फीस जमा नहीं होने के कारण बच्चे की परीक्षा पर संकट मंडरा रहा था। पिता किराए की लोडिंग गाड़ी चलाकर जैसे–तैसे परिवार चला रहे हैं। ऐसे में समिति ने तत्काल सहायता प्रदान कर बच्चे की शिक्षा को रुकने से बचाया।

वहीं, एक अन्य परिवार में पिता गंभीर बीमारी के चलते काम करने में असमर्थ हैं, जिससे दो बच्चों की पढ़ाई पर संकट खड़ा हो गया था। इस स्थिति को समझते हुए समिति ने 16,940 की सहायता देकर दोनों बच्चों की शिक्षा को जारी रखने का मार्ग प्रशस्त किया।

यह केवल आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि उन परिवारों के लिए उम्मीद की नई किरण है, जो परिस्थितियों से हारने के कगार पर खड़े थे। इसी दौरान विभिन्न सामाजिक और जनकल्याणकारी आयोजनों के आमंत्रण भी प्राप्त हुए, जिन्हें सहर्ष स्वीकार करते हुए आयोजकों को शुभकामनाएं प्रेषित की गईं। साथ ही रायपुर में आयोजित भारतीय जनता युवा मोर्चा के होली मिलन समारोह में सहभागिता भी समाजिक जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही।

आज जब समाज में संवेदनाएं धीरे–धीरे कम होती नजर आ रही हैं, ऐसे समय में इंद्रजीत सिंह ह्यछोटूह्न और उनकी टीम यह साबित कर रही है कि सेवा आज भी जिंदा है— और मजबूती से जिंदा है। लगातार, बिना थके, बिना रुके जरूरतमंदों तक पहुंचना आसान नहीं होताङ्ग लेकिन यही कठिन राह उनकी पहचान बन चुकी है।

48 निजी अस्पतालों को स्पष्टीकरण नोटिस जारी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

कलेक्टर अभिजीत के निर्देशानुसार नर्सिंग होम अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत तथा आयुष्मान योजना के अंतर्गत एम्पेनल्ड दुर्ग जिले के सभी निजी अस्पतालों का एक माह के भीतर भौतिक निरीक्षण कर यथा निर्धारित चेक लिस्ट अनुसार निरीक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु 04 निरीक्षण टीम का गठन किया गया था।

प्रत्येक टीम में स्थानीय नगरीय निकाय, जिला आयुष कार्यालय, स्वास्थ्य विभाग के प्रतिनिधि एवं अन्य सदस्य शामिल थे। सीएमएचओ डॉ. मनोज दानी से मिली जानकारी अनुसार जिले में संचालित 124 निजी अस्पतालों के निरीक्षण उपरांत टीम द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट अनुरूप 48 अस्पतालों में कमी पाई गई, जिसके लिए 48 अस्पतालों को छत्तीसगढ़ राज्य उपचर्यागृह तथा रोगोपचार संबंधी अनुज्ञापन अधिनियम 2010 एवं नियम 2013 के तहत स्पष्टीकरण 30 दिवस के भीतर प्रस्तुत किये जाने हेतु कलेक्टर द्वारा नोटिस जारी किया गया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दानी के अनुसार अस्पतालों से प्राप्त जवाब की जॉच हेतु गठित टीम द्वारा 48 अस्पतालों का पुनः निरीक्षण किया गया। निरीक्षण उपरांत 5 निजी अस्पतालों में पाई गई कमियों की पूर्ति किया जाना नहीं पाया गया जो छत्तीसगढ़ राज्य उपचर्यागृह तथा रोगोपचार संबंधी अनुज्ञापन अधिनियम 2010 एवं नियम 2013 की अनुसूची 1 का भाग (अस्पताल एवं नर्सिंग होम) में विहित मानकों का स्पष्ट उल्लंघन होना पाया गया, नर्सिंग होम एक्ट के प्रावधानों का उल्लंघन किया जाना पाये जाने पर 05 निजी अस्पतालों क्रमशः दाउजी मेमोरियल हॉस्पिटल जामगाँव आर पाटन, प्राची हॉस्पिटल, पुलगाँव, जीवन ज्योति हॉस्पिटल, वार्ड नं 5 जामुल भिलाई, आईएमआई हॉस्पिटल, न्यू खुर्सीपार भिलाई, आर्शीवाद नर्सिंग होम, जीई रोड, भिलाई को नर्सिंग होम एक्ट के तहत प्रदत्त लायसेंस तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिया गया है।

पीआरजीआई सं.-CTHIN/25/A3746 यह हिंदी सांध्य दैनिक समाचार पत्र नई दृष्टिबिंद स्वामी एवं प्रकाशक आलोक तिवारी द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 से मुद्रित करवा कर। 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से प्रकाशित संपादक आलोक तिवारी मो. 7415469100 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारण न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।